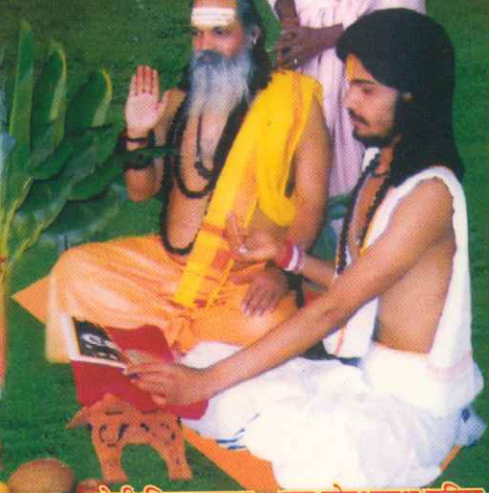


ॐ शिव गोरक्षा व्रत - कथा



अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष वारह पंथ योगी महासभा

रचना - योगी विलासनाथ - पुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, हरिद्वार

॥ स्तुति ॥

अज्ञानान्ति मिरांधस्य,
ज्ञानंञ्जन शलाकया।
चक्षुरन मीलितम् यैन,
तस्मै श्री गुरुवै नमः॥



॥ वन्दना ॥

वन्दे वन्दारु मन्दार,
शिव लोक निवासनम्।
ॐ शिव गोरक्ष व्रतम्,
गुरु चरण कमर्लेपितम्॥

॥ समर्पण ॥

श्री परम श्रद्धेय सतगुरुदेवः ब्रह्मलीन,

अनंत श्री विभूषित 1008 अवधूत योगी आनन्दनाथ जी

(महामन्त्री) महाराज जी के श्री चरणों में समर्पित

“ ॐ नमो शिवाय महापुरुषाय महाविभूति पतेय नमः ”



योगी विलासनाथ

ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा ॐ



श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की कथा पञ्चाध्याय का पूर्ण विवरण तथा विधि विधान इत्यादि सरल हिन्दी भाषा में दिया है जो पाठकों-भक्तों के लिये लाभदायक सिद्ध होगा।

रचना : **योगी विलासनाथ**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) फोन-01334-226583

दिपावली 2010

प्रथम संस्करण 3000]

[मूल्य : 15.00

अथ मंगला चरणम्

ॐ गजबेली गणेशाय गजकन्थडाय नमः ।
माँ सरस्वती देवी नमोस्तुते मंगलाचरणम् ।।
सऽदेशं गुरु देवः ज्ञान चैव ज्ञानोत्तम् ।
गोरक्षाय नमस्कृत्य जती चैव योगेश्वरम् ।।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द श्रीनाथम् ।।

बोलिये “श्री शम्भु जती गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की जय”

प्रथम अध्याय

॥ अथ व्रत कथा प्रारम्भ ॥

वन्दे गुरु गोरक्षम् घट घट विराजितम् ।
भक्तम् रक्ष कलानाथम् शिव गोरक्षंऽभुतम् ।

अर्थात् - घट-घट में विराजमान ऐसे सत्गुरु गोरक्षनाथजी जो भक्तों की रक्षा करने

वाले कलाओं के स्वामी जो शिव स्वरूप अद्भुत है ऐसे शिव गोरक्षनाथ जी को मैं वन्दना करता हूँ।

पूर्वकाल में एक बार सभी जन-मन रंजन समस्त प्राणियों के कल्याण करने वाले और मन के स्वामी चन्द्रमा के अवतार श्री योगी चौरंगीनाथजी ने अत्यन्त रमणीय पुण्य क्षेत्र पुष्कर में ब्रह्मसरोवर के तट पर एक भव्य दिव्य सतसंग तथा विशाल भण्डारा एवं सर्व जनमन रन्जन सभा का आयोजन किया था। वहां पर उपस्थित नाथ सिद्ध श्री योगी कपिलनाथजी, सनकनाथजी, सनत्कुमार, सनातन एवं सनन्दननाथजी, मार्केण्डेयनाथ, मीन, विरूपाक्ष, ज्वालेन्द्रनाथजी, कानिपा, टिण्टीणी, सिद्धपाद, मन्जु, तारा, शाबर, कालनाथ, सिद्धासन, प्रभुदेव, नारददेवनाथजी, गौरीया, मेरू, नागार्जुन, विर-धुन्धुकार, सारस्वताई, बिरबंक, गेहल्लारावल, घोड़ा-चोलिपा, अडबंग, सुकदेवनाथजी तथा औघड़ प्रकाश, मल्लिका, गोरनाथ, मानिक, जम्भ, खेचर-सुरत हवाई, दया, धर्मनाथ, चक्र, वक्र, रतन, चन्द्र, कोरन्ट, कनकाई-भुसकाई, सहजाई, लधाई, चर्पट, बिलेशाय, दरिया, सिद्धबुद्ध, अल्लमनाथ, धीरनाथ, लंकनाथ, भद्र, मद्र, बालकनाथ, सुरानन्द, गरीब, गहीणीनाथजी निवृत्ति, ज्ञानेश्वर, साहिरोबा, श्री श्रृताईनाथजी, भगाई, मनसाई, ब्रह्माई, नरमाई, मस्तनाथजी, बालगुन्दाई

नाथ, गोपाल, देवनाथ, पिप्पलनाथ इत्यादि ब्रह्मनिष्ठ, आत्मसाक्षात्कारी तंत्र-मंत्र श्रद्धा-सिद्धि से युक्त नाथ सिद्ध महात्मा अपने-अपने शिष्यों-भक्तों सहित जन कल्याण के विचार से इस भव्य सतसंग समागम सभा में पधारे हुये थे।

इसी समय तीर्थाटन करते हुए श्री गुरु गोरक्षनाथजी के प्रधान शिष्य योगी भर्तृहरिनाथजी एवं गोपीचन्द नाथ जी अपने शिष्यों काया, प्रौढ, भुचरनाथ के साथ उधर ही आ रहे थे ऐसे नाथ मण्डल को आते हुये देखकर परम तपस्वी श्री चौरंगीनाथजी अपने शिष्य काकचण्डीनाथ तथा अनन्त सिद्धों के साथ उठ खड़े होते हुए भव्य स्वागत आदर सत्कार करते हुए, उन्हे मनोहर उच्च आसनों पर विराजमान किया। ज्ञानियों ने कहा है कि

“अतिथि देवो भव” शुभं सुस्वागतम्।

शुभ लाभ भवति च महत् पुण्य फलम्।।

अर्थात् - समागत विद्वान-ज्ञानी, साधु, सन्त अतिथियों का देवताओं के समान उत्तम स्वागत, सत्कार करना चाहिए। जिससे शुभ लाभ होकर महापुण्य फल की प्राप्ति होती है।

अतः परमयोगी अजरामर भर्तृहरिनाथजी ने सभी नाथ सिद्धों को सादर आदेश करते हुये सुखपूर्वक आसन पर विराजमान हुये और सभी नाथ सिद्ध अपने-अपने आसनादिष्ट हो

गये तब सविनय जिज्ञासु भाव से नाथ सिद्धों ने योगी भर्तृहरिनाथजी से प्रश्न किया। हे परमज्ञानी महाराज जी इस घोर कलियुग में मानव प्राणी मात्र में अधर्म, अत्याचार, भ्रष्टाचार, काम, क्रोध, मद, मोह इत्यादि सभी नास्तिकता के कारण सभी जीव अज्ञानी दुःखी एवं कष्टी हो रहे हैं। उनसे ना तपस्या हो पा रही, ना योग-ध्यान ना पूजापाती और नाही निष्काम कर्म, अर्थात् उन्हीं को नाही ज्ञान, नाही धर्म, ना कर्म और ना मनवांछित फल की प्राप्ति हो रही है। अतः हे कल्याणकारी हे दयालु महात्मन आप ऐसा कोई सर्व श्रेष्ठ सार रूपी उपाय हो, व्रत साधन हो जो साधारण से साधारण मनुष्य वांछित फल को प्राप्त कर सके। सो वह किस प्रकार का व्रत है ? वह हमें बतलाने की कृपा करें। नाथ सिद्धों के ऐसे विनित भाव से कहे गये वचनों को सुनकर बड़े आदर भाव से योगी राज भर्तृहरिनाथजी कहने लगे। हे सन्त जन मैं आपको ऐसी सारपूर्ण व्रत कथा अवश्य सुनाऊँगा। पूर्वकाल में ॐकार आदिनाथजी ने माता पार्वती को क्षीर सागर के तटपर एकान्त में सर्वोत्तम ज्ञान सुनाया था तब प्रत्यक्ष स्वयं माया को भी वैराग्य हो गया था और उनके वरदान से माता पार्वती ने इस मृत्युलोक में योगीणी उदयनाथजी नाम से अवतार लिया था। तब वह वैराग्य और ज्ञान वश सभी सृष्टि अतः चौदह भुवनों में भ्रमण करने लगी तब उन्हीं ने देखा कि समुची सभी प्राणी दुःखमय,

पीड़ामय एवं कष्टप्रद जीवन व्यथित कर रहे हैं। अज्ञानवश वह अनेकों प्रकार के पापकर्म करते हुये दुःख के भागी हो रहे हैं। अस्थिर-अस्वस्थ मन अनेकों इच्छाओं में अतृप्त होकर भटक रहे हैं। भ्रमित के कारण सत्चित्त आनन्द तथा परमार्थ को करने में असमर्थ हो गये हैं। कामक्रोधादि विकारों से ग्रसित अनन्त कष्ट झेल रहे हैं। अतः इन सभी कष्टों का, सभी दुःखों का कैसे निवारण होगा और वह कैसे सुख-आनन्द एवं समृद्धि को प्राप्त होंगे ? ऐसे अनेकों विचार करते-करते उन्हें अपने सत्गुरु ॐकार आदिनाथजी कि याद आ गयी और गुरु मिलन कि आस में वह कैलास पर्वत शिवलोक में जाने लगी।

शिवलोक पहुँचने पर देखा कि भगवान् आशुतोष आदिनाथजी अपने ध्यान तपस्या में बैठे हुये थे। उन्हें उनके दर्शन पाकर वह बहुत ही आनंदित होकर भाव विभोर होते हुये उनकी स्तुति गान करने लगी हे आशुतोष ॐकार आदिनाथजी, हे परमयोगी, परमज्ञानी मेरे प्रिय गुरुदेव आपका मुखारविन्द अनन्त सूर्यों प्रकाश पुञ्ज से दिव्य तेजोमय होकर प्रगट हो रहा है। इन नीली पीली जटाजूट में विराजे चन्द्रमा का अमृतपान करने वाले हे चन्द्रशेखर अपने अति सुन्दर इन नेत्र कमलों से मुझपर दया दृष्टि करो। हे त्रिलोकी के ईश्वर हे त्रिकाल ज्ञानी आपके मस्तक पर के त्रिपुण्ड्र भस्मी जगत का सब पाप भस्म करने वाले। हे परम विभूति,

भस्मांकित कर्पूर कान्तिवाले। हे महेशनाथजी शेष मालाओं से सुशोभित और शेषासनपर
 विराजमान। हे नाथो के नाथ अपने नाद जनेऊ दिव्य कर्ण कुण्डलो, त्रिशूल डमरू आदि से
 शोभायमान। हे परम तपस्वी मम सत्गुरु देव मैं आपको आदेश नमन करती हूँ। आप ध्यान
 तपस्या में से जाग्रत होकर मुझे कृपा आशीर्वाद दीजिए। ऐसी स्तुति गान सुनकर भगवान
 ॐकार आदिनाथजी जाग्रत हो गये। तब उन्हें देखते हुये सती उदयनाथ प्रसन्न होकर कहने लगी
 हे अलख निरञ्जन हे निरंजन निराकार हे आदि अनादि हे शक्ति स्वरूप हे ज्ञान के ईश्वर हे भक्तों
 के दुःख हरण हे हरे हरे पाप हरे जगत कल्याण के लिये बार-बार अवतार धारण करने वाले,
 मेरे सत्गुरु जी हम पर कृपा करो इस प्रकार अपनी स्तुति को सुनकर प्रसन्न होते हुये ॐकार
 आदिनाथ जी कहने लगे हे परम योगिनी उदयनाथ पार्वती कहो किस कारण वश तुम कैलास
 लोक में आई हो? तुम्हारी की हुई स्तुति से मैं अति प्रसन्न हूँ। श्री नाथ जी के स्नेह भरे वचन
 सुनकर उदयनाथ जी ने कहा हे सत्गुरुदेव हे भव-भय हारी। मेरा प्रणाम, मेरा आदेश स्वीकार
 करो। अतः मैं अभी-अभी मृत्युलोक से भ्रमण करती हुई आयी हूँ। वहां सभी प्राणी अनेक प्रकार
 के दुःखों को भोग रहे हैं। अन्याय-दुराचार-अधर्म से पीड़ित जनमानस सब अधोगति को जा रहे
 हैं। अज्ञान-भ्रमित-जनता अनेकों क्लेश-शोक में डुबे हुये हैं। अतः हे दयानिधि हे तारणहार आप
 कुछ ऐसा उपाय बताईए जिससे उन प्राणियों का सभी प्रकार के दुःख क्लेश एवं कष्ट को नष्ट

होकर वह सुख एवं आनन्द को प्राप्त कर सके। उनका उद्धार हो जाय। तब ॐकार आदिनाथजी ने बड़े-प्रेम भाव से कहा हे ज्ञान का उदय करने वाली और दया-धर्म योगिनी उदयनाथ तुमने बहुत ही उत्तम बात पूछी, जिससे संसार के सभी जीवों का कल्याण होगा। तुम जगत जननी हो तुम्हारे स्नेह वश मैं जो भी कहता हूँ जिससे यह जानने तथा इसे करने के उपरान्त प्राणी संसार के मोहपाश से मुक्त होकर परम पद को, अतः एवं शिव लोक को भी प्राप्त कर लेगा। यह माया बड़ी ठगी है। अपने घर-बार पति-पत्नि अपनी सन्तान, सम्पत्ति इत्यादि से मोहवश वह संसार माया में फसे हुये है। वास्तव में अन्त में सब कुछ छूट जाता है और केवल अपने किये हुये अच्छे-बुरे कर्म, पाप-पुण्यादि का फल ही साथ आता है। इन सभी बातों को समझने एवं जानने के लिये सत्य के ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। हे प्रिय उदयनाथ अब मैं एक अत्यन्त सरल-साधारण छोटा सा उपाय बतलाता हूँ। जरा ध्यानपूर्वक सुनो, जिससे सभी नर नारी प्राणी मात्र का इस घोर कलिकाल में उद्धार होगा, कल्याण होगा। हे प्रियदर्शनी हे परयोगिनी तुम्हारे गुरु भक्ति से प्रसन्न होकर मैं कहने जा रहा हूँ जो कि वह एक ऐसा उत्तम व्रत है। जो महद् पुण्यफल को प्रदान करने वाला और तीनों लोक में दुर्लभ है और वह है एक उपासना, एक उपाय है, जिसका नाम ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा है।

अर्थात् - मेरे ही शिव स्वरूप-ज्योति स्वरूप श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी का व्रत कथा है जो भी इसका पाठ (वाचन) कथा-कथन श्रवण-मनन अतः एवं पूजन करेगा वह सभी कष्टों से सभी दुःखों से मुक्त होकर सब सुख धन ऐश्वर्य को प्राप्त कर अन्त में मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त होगा। तब भगवान् श्री नाथ जी के ऐसे सुन्दर वचन सुनकर सती उदयनाथजीने कहा, हे चराचर जगत सृष्टि के गुरुदेव इस ॐ शिव गोरक्ष व्रत का क्या फल है और इसकी कैसी विधि है। यह कब और कैसा करना चाहिए, क्या पूर्व काल में इस व्रत की उपासना किसी ने की है? अतः आप विस्तार पूर्वक वर्णन बताने की कृपा करिये। ऐसे योगिनी के वचन सुनकर ॐकार आदिनाथजी अपने मधुर वाणी से कहने लगे हे प्रिय शिष्य, यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत समस्त क्लेश, दुःख, शोक, दारिद्र्य और पापों को नष्ट करने वाला है और धन-धान्य-सम्पत्ति बढ़ाने वाला है। इससे भक्त अचल भक्ति को तथा अक्षय पुण्य को प्राप्त होगा। उसी प्रकार यह व्रत सौभाग्य, उत्तम गुणवान् सन्तति, उत्तम करोबार, सर्वत्र विजय इत्यादि फल को प्रदान करने वाला है। अतः मैं इसका विधि विधान बतलाता हूँ।

ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा-विधि

हे नाथ उदय इसे मन-अन्तकरण से सुनो मुख्यता रविवार के दिन या किसी भी उत्तम

दिन-या उत्तम मुहूर्त पर या रोज नित्य प्रति यह व्रत श्रद्धा भक्ति पूर्वक किया जा सकता है। प्रातः या सन्ध्या अपने सभी बन्धु-मित्र जन, साधु-सन्त ब्राह्मण तथा भक्त जनों के साथ सब मिलकर इस ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का पूजन-पठन-श्रवण करना चाहिये।

इसके साहित्य में - ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का ग्रंथ, मौली, केशर, चन्दन, पान, सुपारी अनेकों पुष्प पुष्पमालायें, धूप-अगरबत्ती, पंचामृत चौकी सफेद, लाल तथा भगवा वस्त्र, पंचपल्लव, नाद जनेऊ, रुद्राक्ष, पश्चरत्न (मूंगा-स्फटिक इ०) अक्षद, अष्टगंध अबीर, पानीवाला नारियल, ताम्र कलश, कुशा, समई, दक्षिणा कच्चा या पक्का रोट प्रसाद, पंचफल, मिष्ठान, केले के पत्ते युक्त स्तम्ब, आम्र या नीम के पत्ते इत्यादि सामग्री एकत्रित कर लेनी चाहिए। अब विधि सुनाता हूँ।

विधि

अपने घर या मन्दिर या एकान्त स्वच्छ सुन्दर पवित्र स्थान में आम निम्ब के पत्तों सहित बड़ा मण्डप बनाये उस मण्डप के बीचों बीच भूमि पर एक चौकी रखे जिस पर सवामीटर नया सफेद या लाल वस्त्र बिछाये चौकीके चारो (खूंटों) स्तम्ब को चार केले के पत्तों युक्त

खम्बो में मौली से बाँधकर चौकी पर सुन्दर मण्डप बनाये अतः चौकी के बीचों बीच (अक्षत) चावलों का स्वास्तिक या राशि बनाके उस पर गुरु गोरक्ष नाथजी के नाम का एक कलश स्थापन करना चाहिये (कलश के साथ गोरक्षनाथ जी की तस्वीर या यन्त्र भी रख सकते हैं) अब कलश स्थापना सुनो।

कलश स्थापना - इस प्रकार उन अक्षत (चावलों के) स्वास्तिक ऊपर एक ताम्र (मृतिका के) लोट्टे में गंगाजल + अष्टगंध + एक सुपारी + दक्षिणा + अक्षत डालकर लोटे के मुख ऊपर पंच पल्लव (पान या आम्र या पीपल या वटवृक्ष के पाँच पत्ते) कमल सदृश्य रखे उस पर मौली या भगवा वस्त्र लपेटा हुआ नारियल खड़े रूप में रखे, कलश के सन्मुख थोड़े से अक्षत के ऊपर पान सुपारी रखते हुये श्री गणेश जी की स्थापना करे फिर कलश के एक तरफ अक्षत ऊपर पान सुपारी रखते हुये अपने सतगुरुजी की स्थापना करे उसी प्रकार कलश के अन्य तरफ अक्षत पान सुपारी रखते हुये शिव शक्ति की स्थापना करनी चाहिये। अतः पूजन सामग्री लेते हुये सभी स्थापित देवताओं का पूजन करना चाहिये। प्रथम श्री गणेश जी का फिर सतगुरुजी का तदनन्तर शिव शक्ति और गुरु गोरक्षनाथजी का पूजन करना चाहिये। चौकी सन्मुख धूप-दीप-अगरबत्ती इत्यादि से वातावरण प्रसन्न और सुगन्धित करना

चाहिए। फूलों-पुष्पमालाओं, रंगोली इ० से पूजा स्थान सुशोभित करके निम्न मन्त्र विधि से यथा उपचार पूजन करना चाहिये।

अथ-पूजन

1. प्रथम निम्न मन्त्र से आँखे बन्द करते हुये हाथ जोड़कर शिव गोरक्षनाथजी का ध्यान करे।

★ ध्यान - “ॐ मंगलं भगवान् शम्भु मंगलं जती गोरक्ष।

मंगलं मत्स्येन्द्र शिष्य, मंगलाय सर्व रक्षकः॥”

2. निम्न मन्त्र कहते हुये कलश ऊपर आसन के लिये (अक्षत) चावल रखे।

★ आसन - ॐ शम्भुजती गोरक्षाय नमः हृदयात्मने आसनम् समपर्यामि।

3. निम्न मन्त्र कहते हुये कलश ऊपर जल या पंचामृत सह जल छिडके और भगवे वस्त्र तथा नाद जनेऊ या यज्ञोपवित चढ़ावे

★ दिव्य स्नान - “ॐ शम्भुजती गोरक्षाय नमः वँ अमृतात्मक दिव्य स्नान, वस्त्रं च नाद यज्ञपवित समपर्यामि।”

4. निम्न मन्त्र से कलश ऊपर चन्दन (तिलक) लगावे और बिल्वपत्र या पुष्प (पुष्पमाला)

चढ़ाये

★ तिलक पुष्पदान - “ॐ शम्भुजती गोरक्षाय नमः ‘यै’ वायंवात्मकं
चन्दनं बिल्वपत्रं च पुष्प समपर्यामि।”

5. निम्न मन्त्र कहते हुये कलश ऊपर धूप, अगरबत्ती, गौघृत दीपक या देशी घृत दीपक तथा कर्पूर प्रज्वलित करते हुये आचवावे या अर्पण करे।

★ पूजन - “ॐ शम्भुजती गोरक्षाय नमः रँ तेजातत्वत्मकं धूपं दीपं च कर्पूर समपर्यामि।।”

6. अतः निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुये कलश के सन्मुख कच्चा या पक्का रोट और गौ का दूध (मिस्री डालते हुये) का भोग (नैव्यद्य) लगाये और मुखशुद्धि हेतु लवंग इलायची सुपारी का ताम्बुल अर्पण करे।

भोग - ॐ शम्भुजती गोरक्षाय नमः “लँ” पृथिव्यात्मकं रोट दुग्ध च मुखवासार्थं
ताम्बुलं समपर्यामि

7. अतः निम्न मन्त्र उच्चारण करके जल हाथ में लेकर भूमि ऊपर छोड़ देवे।

★ “ॐ तत्सद् गुरुदेवाः अपवामास्तु।” ॐ नमो आदेश-आदेश-आदेश ।। (पृथक)

उपरोक्त विधि से अन्य देवी-देवता सतगुरु जी का पूजन करे। जिसमें फल, दूध,

हलुवा, पक्का रोट, मिठाई, मिष्ठान इत्यदि का भोग नैव्यद्य तथा ताम्बुल चढ़ाये। यह विधि सन्त या ब्राह्मण द्वारा भी कर सकते हैं।

इस प्रकार हे उदयनाथ पार्वती इस व्रत-कथा विधि में साधु सन्त, नाथ महात्मा या ब्राह्मण व्रती तथा रिश्तेदार बन्धुजनो एवं आमंत्रित भक्त सब धर्म में तत्पर होकर यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत करना चाहिए। तदपश्चात् अपने सत्गुरु, नाथ योगीश्वर या सन्त, ब्राह्मण तथा इस ग्रंथ पुस्तक का पूजन को दान दक्षिणा अर्पण करके आदर सन्मान करके कलश स्थापित श्री गोरक्षनाथजी एवं सर्व भक्तों के सर्व सन्मुख ग्रंथ व्रत कथा का पाठ वाचन करना चाहिये जो कि सभी व्रती भक्त जन इस व्रत कथा को भक्ति भाव से श्रवण करे तदपश्चात् सभी मिलकर श्री गणेश जी की तथा गुरुजी की, गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती करके निम्न प्रार्थना करे।

॥ प्रार्थना ॥

यं व्रत तेजः समुद्दिष्टं कथा पाप हरं परम। कथा श्री गोरक्ष प्रियम् सर्व व्रते प्रतिष्ठितम्॥
त्व चैव व्रतमयं नाथ केल्यितासि मया किलं। सर्व पापापनोदाय सुखाय भव भवामि॥

अर्थात् - इस (शिव गोरक्ष) व्रत कथा को तेजवर्धक तथा पापापहारी बतलाया गया है। श्री गोरक्षनाथजी को यह (व्रत) कथा प्रिय है। जो सर्व व्रतों में ही प्रतिष्ठित है। इसलिए हे व्रतमय श्री गोरक्षनाथजी आप मेरे द्वारा कलश में स्थित कल्पित किये गये हो मेरे पापों को नष्ट कर मुझे आनन्द को प्राप्त करो। आदेश।

अतः सभी को प्रेम आदर सहित भोजन करावे या प्रसाद बांटों तदपश्चाद संध्या या रात्री में भजन-कीर्तन-जागरण-संकीर्तन-भक्ति गीत भक्ति नृत्य इत्यादि भगवान गोरक्षनाथजी के सन्मुख भक्ति से सम्पन्न करे। अन्त में - “श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की जय” कहते हुये नाम लेते हुये बिदा लेते हुये स्वस्थान जाये। इस प्रकार हे प्राणप्रिये उदयनाथ पार्वती यह व्रत कथा जो प्राणी करेगा वह मनवांछित फल पायेगा और धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को प्राप्त होगा। वास्तव में यह सत्य है कि कलियुग में इससे सरल उपाय और कोई नहीं है।

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

“बोलिए शिव-शक्तिमय गोरक्ष भगवान की जय हो! जय हो!”



इस प्रकार श्री योगी राज भर्तृहरिनाथ जी वहां के सभी उपस्थित नाथ सिद्धों को तथा भक्तों को भगवान आदिनाथजी द्वारा कथित योगिनी उदयनाथ जी को बताये हुये ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का विधि विधान बताते हुये आगे सर्व प्रथम पूर्वकाल में इस व्रत कथा को करने वाले के सम्बन्ध में कथन करते हैं।

इस पृथ्वी मण्डल में इन्द्रावती नाम की पूरी में कल्पसिंह नाम का राजा राज्य करता था। वह बड़ा ही धर्मात्मा और दानधर्म करने वाला था एक बार वह पतित पावनी माँ गंगा स्नान के लिये अपनी सुन्दर रानी इन्द्रावती सहित गंगा तट पर गये। गंगा स्नान उपरान्त अति प्रसन्नता से वहां के साधु सन्त द्विज ब्राह्मणों को बहुत दान धर्म किया। उस पुण्य भूमि गंगा तट का सुन्दर और मनोहर स्थल को देखते हुये और वातावरण में प्रसन्नता चैतन्य को देखते हुये। वही पर एक कलाप नाम का नगर बसाया और वही धर्म कर्म करते हुये राजकाज करने लगा। यह कलाप नगरी सुख, सम्पन्न, धन, ऐश्वर्य तथा धर्म-कर्म से परिपूर्ण, वेद शास्त्र कला ज्ञान से भरपूर थी। किन्तु उस राजा की कोई सन्तान नहीं थी। अतः वह अन्तरमन में दुःखी और खिन्न रहता था। उसका नियम था कि प्रातः जो भी द्वारा पर आते उन्हें आदर

सहित दान धर्म करता था। तब याचकों की वहां भीड़ होती थी। वहां के द्विज-ब्राह्मण-भिक्षु धन सम्पन्न हो गये थे और राजा कल्प सिंह दानवीर की जय जयकार होती थी। उसी नगरी के निकट घने जंगल में एक नाथ बाबा जी अपनी तपस्या में रहता था। इस दानवीर राजा की ख्याति सुनकर राजा के पास जाने की उसकी इच्छा हो गयी तब एक दिन प्रातः महात्मा नाथ बाबा जी राजा के द्वार पर पधारे जब राजा रानी प्रसन्नतापूर्वक नाथ बाबाको दान देने लगे तो नाथ बाबा जी कहने लगे।

हे राजन अगर यह दान तुम्हारे कष्ट का होगा तो ही मैं स्वीकार करूंगा। अन्यथा बिना श्रम का दान नहीं लूंगा। तब राजा कल्पसिंह ने विनम्रता से कहा हे महात्मा आप कल इसी समय पधारो मैं अवश्य मेरे कष्टों का दान दूंगा। तब श्री नाथ बाबा जी पुनः अपने जंगल चले गये। इधर रात्री को राजा ने दासों का वेष लेकर नगरी में विचरण करने लगे। राजा ने देखा कि एक लौहकार अपनी दुकान में लोहा कूट रहा था। तब उसे राजा ने कहा कि मुझे मोल पर कुछ काम दो उसने राजा को लोहा कूटने का काम दिया, दो घड़ी तक राजा ने बड़े कष्ट से काम किया और उस काम से उन्हें पांच पैसे मिले। राजन अपने महल में लौट आये, दूसरे दिन प्रातः दानशाला में जब वह नाथ बाबा आये तो उन्हें वही पांच पैसे दान में दिये। श्री नाथ जी ने देखा की राजा के हाथों में छाले पड़े हैं, मुखमण्डल पर थकान है! तब नाथ बाबा कहने लगे हे दानवीर

राजन तुम्हारे इस दान से मैं प्रसन्न हूँ तुम कुछ वर मांग लो। तब हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुये राजा रानी ने सन्तान प्राप्ति का वर मांगा। महात्मा नाथजीने कहा हे राजन मैं आपके दुःख का कारण भलीभाँति जानता हूँ। अतः मैं एक श्री गुरु गोरक्षनाथजी की व्रत कथा बतलाता हूँ। इसकी उपासना तुम पति-पत्नि भक्ति भाव से करोगे तो तुम्हें अवश्य उत्तम सन्तान की प्राप्ति होगी और श्री नाथ बाबाजी ने उन्हें ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा को निरूपण किया। तब राजारानी ने बड़ी प्रसन्नता से व्रत को धारण करते हुये प्रत्येक रविवार को गंगाजी में स्नान कर तट पर एक वट वृक्ष के नीचे ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का पूजन करने लगे। उन्होंने सवा वर्ष तक वह व्रत कथा करते रहे। अन्त में व्रत सांगता उद्यापन करके प्रसाद ग्रहण करते समय उन्हें गुरु गोरक्षनाथ जी ने प्रसन्न होकर पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया।

कुछ दिन पश्चात् रानी इन्द्रावती की गोद भर गयी दस मास के बाद उन्हें एक सुन्दर पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। राजा रानी प्रजा में खुशिया आयी राजा ने भरपूर दान धर्म करके साधु सन्त नाथ महात्मा और ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया और पुत्र का नाम गंगा सिंह रख दिया। अब पुत्र गंगा सिंह गुरुकुल से सब विद्या ग्रहण करके अपने कलाप नगर में आया तब राजा कल्पसिंह और रानी ने अपना पुत्र आने के उपलक्ष में भागीरथी गंगा किनारे एक सुन्दर वट वृक्ष के नीचे बैठकर

ॐ शिव गोरक्ष व्रत उत्सव मनाया। सभी बन्धु सगे साथी सन्त भक्तजन आमंत्रित किये थे और बड़े उत्साह भरे भाव भक्ति से व्रत कथा कथन चल रहा था। और इसी समय कदम्ब देशके निवासी एक श्रेष्ठी नामक वैश्य अपनी भार्या मंगला सह घोड़ा गाड़ी में कुछ व्यापार धन लादे हुए यहां से गुजर रहा था। इनका ॐ शिव गोरक्ष व्रत उत्सव देखकर कुतुहल वश अपनी घोड़ा गाड़ी छाव में खड़ी करक वह राजा रानी के समीप आया। उन्होंने देखा कि राजा रानी तथा भक्त बड़ी भक्ति से ॐ शिव गोरक्ष व्रत पूजन तथा कथा वाचन कर रहे थे। अन्त में महा प्रसाद लेते समय वैश्य श्रेष्ठी और मंगला ने बड़े ही विनय पूर्वक राजा को पूछा हे राजेश्वर आप इतनी भक्ति-प्रेम पूर्वक यह किसका और किस लिये पूजन कर रहे हो? आप हमें विस्तार पूर्वक बताईए। तब महाराज जी ने मीठे स्वर में कहा हे वैश्यराज हम सब भक्त भगवान शिव के स्वरूप गुरु गोरक्षनाथ का व्रत कर रहे हैं। देखो मुझे सम्पन्न राज्य, सुख सम्पदा इत्यादि सब कुछ होते हुए भी मुझे कोई सन्तान नहीं थी किन्तु श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की दया कृपा से मुझे यह पुत्र गंगासिंह और धन ऐश्वर्य प्राप्त हुआ। अतः हम हमेशा यह व्रत करते आये हैं और करते भी रहेंगे।

ॐ शिव गुरु गोरक्ष व्रत से भक्ति शक्ति महान।

निर्धन को धन मिले निः सन्तान को सन्तान॥

राजा के ऐसे सुन्दर वचन सुनकर श्रेष्ठी वैश्य और मंगला बोले हे भक्तिमय महाराज जी हम दोनों इस व्रत का महा प्रसाद ग्रहण करके यह संकल्प करते हैं कि जब गुरु गोरक्ष नाथ जी की कृपा से हमें भी सन्तान प्राप्त होगी तो हम भी यह व्रत अवश्य करेंगे। आप हमें इस व्रत की सम्पूर्ण विधि बताने की कृपा करें। तब राजा ने कहा देखो वैश्य राज मैं व्रत विधान अवश्य बताऊंगा किन्तु तुम इसे कदापि नहीं भूलना और नाही व्रत को छोड़ना, अन्यथा बहुत बुरा होगा। अब श्रेष्ठी वैश्य वचन बद्ध होकर राजा को विश्वास दिलाया कि हम व्रत को अवश्य निभायेंगे और तब राजा ने उन्हें व्रत विधि बतायी। व्रत विधि ग्रहण करके वह आनन्दपूर्वक आपने देश को चले गये। तदपश्चात् इधर जब राजकुमार गंगासिंह बड़ा हो गया। तो राजा कल्प सिंह ने सभी राजपाठ उन्हें सौंपकर अपनी रानी सह तीर्थ यात्रा को चले गये और तब से वह गंगासिंह भी गुरु गोरक्ष नाथ, व्रत की भक्ति करते हुये नब्बे साल तक राज्य करता रहा।

पुत्र का राज्याभिषेक होने पर राजा कल्पसिंह और रानी इन्द्रावती तीर्थ यात्रा करते-करते हिमालय की ओर देव भूमि स्वर्ग लोक के तरफ चलने लगे। रस्ते में जहां कहीं भी गुरु गोरक्षनाथ जी की याद में व्रत किया करते थे। प्रवास में जब उन्होंने गंगा किनारा

देखा तो कुछ दिन यहां विश्राम हेतु वास्तव्य करेंगे ऐसा सोचकर वही पर एक सुन्दर कुटियां बनाकर रहने लगे। एक बार रविवार को अच्छा मुहूर्त पर वह ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा को करने लगे। पूजन करते हुये उन्हें शाम हो गयी और वह ध्यान भजन में लग गये। उस वक्त उधर से कोई एक जटाजूट तपस्वी महात्मा अपनी माला कमण्डल चिमटा संभाले यात्रा करते हुये जा रहा था। वह मार्ग में थक जाने के कारण रात्री के लिये सहारा ढूंढ रहा था। उन्होंने कुटिया को देखा तो सोचने लगे चलो आज यही पर रात्री गुजारेंगे और प्रातः ही चल पड़ेंगे। अतः उन्होंने कुटिया के सन्मुख जाकर बहुत आवाजे दी किन्तु अन्दर से कोई प्रतिसाद नहीं आया, तपस्वी ने अन्दर झाँककर देखा तो यह दोनों पति-पत्नि अपने गुरु गोरक्षनाथजी के ध्यान में मग्न हो गये थे और इसलिये वह तपस्वी की आवाज सुन नहीं पाये। तपस्वी ने क्रोध में आकर उसी वक्त उन्हें शाप दे दिया जाओ जिसकी याद में मग्न होकर तुम मेरा अनादर कर रहे हो उन्हे तुम भूल जाओगे, भ्रष्ट हो जावोगे और वह तपस्वी वही से तुरन्त अपनी यात्रा की ओर चल दिया। दूसरे ही दिन प्रातः वहां एक भयंकर तूफान आया और इनकी कुटिया अस्तव्यस्त होकर बिखर गयी राजा रानी उस तपस्वी के शाप के कारण भ्रमिष्ट हो गये थे। वह सबकुछ भूल गये थे। उनका गोरक्षनाथ व्रत करना, राज्य त्यागना, तीर्थयात्रा, पुत्र, यह टूटी कुटिया, कहाँ आये

थें कहाँ जाना है इत्यादि सब कुछ बातों का विस्मरण होकर वही गंगातट तपोवन, जंगल में भटकने लगे, नाही स्नान, नाही पूजा पाठ नाही ध्यान ना कोई भोजन पानी उनके वस्त्र अस्त व्यस्त जीर्ण होकर फट गये थे उनके शरीर भी कृश हो गये थे और ऐसी भ्रमिष्ट अवस्था में एक वर्ष बीत गया। एक दिन राजा रानी भूखे-प्यासे हीन-दीन भ्रमिष्ट अवस्था में एक पीपल पेड़ के नीचे पड़े हुए थे। उनके पूर्व पुण्याई से जो गुरु गोरक्षनाथ जी का अनेकों बार व्रत करते थे। दान धर्म करते थे। इन सभी पुण्य प्रेणितं गुरु गोरक्षनाथजी को अपने इन भक्तों की दया आ गयी और उनका उद्धार करने का समय आ गया यह सोचकर गुरु गोरक्षनाथजी एक भिक्षुक के वेश में वहां प्रगट हो गये और अपने कमण्डल से जल अभिमंत्रित करके उन राजा-रानी के ऊपर छिड़क दिया तब उन्हें नव चैतन्य प्राप्त होकर वह चेतन हो गये भिक्षुक ने अपने झोली में से भभूति उनके शीश पर डालते ही उनका शाप विमोचन होकर उनका सभी भ्रम नष्ट होकर वह पूर्व स्थिति में पूर्वगत हो गये। अपने सन्मुख तेजस्वी भिक्षुक को देखकर नमस्कार करते हुये बड़ी करुणा भाव से पूछा कि हे महात्मन हम पर कृपा करके यह बताइए कि यह सब कैसे हुआ। तब भिक्षुक वेशधारी गुरु गोरक्षनाथजी ने उन्हें सब घटित वृत्तान्त बताया। तब राजा-रानी ने कहा हे

महात्मन हमें यह मार्ग बताइये कि गुरु गोरक्षनाथ जी का हमें दर्शन कब होगा। जो कि वही हमें इस भवसागर से पार करके मुक्ति दिलायेंगे। तब गुरु गोरक्षनाथ जी अपने प्रगट रूप में आकर और दिव्य दर्शन देकर उन्हें कृतार्थ किया और बताया कि हे भक्तों तुम मेरा व्रत को करते हुए हिमालय की ओर चले जाओ वहां तुम मेरे वायु लोक धाम को पहुँचकर मोक्ष को प्राप्त करोगे और ऐसा आशीर्वाद देकर वह अन्तरध्यान हो गये। अतः राजा कल्पसेन और रानी इन्द्रावती को नवचैतन्य प्राप्त हुआ उन्होंने पुनः ॐ शिव गोरक्ष व्रत बड़े भक्ति से सम्पन्न किया उन्हें वायु लोक का मार्ग प्राप्त होकर अन्त में अलख क्षेत्र अक्षय धाम को पहुँच कर वह दिव्य शरीर सह मोक्ष को प्राप्त हो गये।

तब सत्संग सभा में योगी भर्तृहरिनाथ जी कहने लगे, हे सिद्धों सन्त इस प्रकार गुरु गोरक्ष नाथ जी के कृपा से उन राजा कल्पसेन और इन्द्रावती को राज पाठ, पुत्र प्राप्ति होते हुये अन्त में शाप मुक्त होकर प्रत्यक्ष गुरु गोरक्षनाथजी का साक्षात्कार होकर मोक्ष के अधिकारी हो गये और तद्पश्चात् योगी राज भर्तृहरिनाथजी मौन हो गये।

॥ इति द्वितीय अध्याय ॥

“बोलिए जती गोरक्षनाथ भगवान की जय.....”

अतः योगी राज भर्तृहरिनाथ जी को मौन देखते हुए। उस सत्संग सभा में नाथ सिद्धों ने पुनः पूछा हे तपोनिष्ठ भर्तृहरिनाथ जी अब हमें बताओ कि उन वैश्य श्रेष्ठी और उनकी पत्नि मंगला का आगे क्या हुआ? क्या उन्होंने ॐ शिव गोरक्ष व्रत को प्राप्त किया? उन्हें व्रत के उत्तम फल की प्राप्ति हुई या नहीं? आगे उनका क्या हुआ? सिद्धों के उत्सुकता वश प्रश्न सुनकर

श्री योगी राज भर्तृहरि नाथ जी अपने मधुर वाणी से कहने लगे हे सिद्धों इस प्रकार राजा कल्पसिंह से ॐ शिव गोरक्ष व्रत को धारण करते हुए वह श्रेष्ठी नामक वैश्य और मंगला अपने कदम्ब देश आकर उत्तम व्यापार करने लगे। व्यापार में वह अत्याधिक लाभान्वित होने लगे आगे एक दिन ऋतु समय आनेपर गुरु गोरक्षनाथ जी के कृपा से वैश्य की रूपवती पत्नि मंगला गर्भवती हो गयी। अब दोनों वैश्य पति-पत्नि अत्यंत आनन्दित होते हुए सन्तान प्राप्त होने की प्रतीक्षा करने लगे और दस मास पश्चात् मंगला ने एक सुन्दर पुत्र रत्न को जन्म दिया। दिनों दिन वह पुत्र शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा समान गुण कलाओं से बड़ा होने लगा। एक बार अपने सुन्दर पुत्र को देखकर आनन्दित होते हुए सौ० मंगला ने वैश्य श्रेष्ठी

को कहा हे स्वामी अपना पुत्र ॐ शिव गोरक्ष व्रत के महाप्रसाद का ही फल है। जैसे हम दोनों ने वहां जो संकल्प किया था। वह ॐ शिव गोरक्ष व्रत पूजन का संकल्प सम्पन्न करना चाहिए। तब वैश्य ने कहा हे प्रिये मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ और गोरक्षनाथजी की व्रत कथा करने के लिये उत्सुक हूँ। किन्तु यह वैश्य स्वभावता लालची होने के कारण आगे उसने कहा कि जब हमें उचित मात्रा में धन की प्राप्ति होगी तब उचित शुभ समय देखकर पुत्र का नामकरण करते हुए ॐ शिव गोरक्ष व्रत उत्सव बड़ी धूमधाम से मनायेंगे। अतः तुम चिन्ता मत करो। तब ऐसे ही दिन बीतते गये किन्तु वह कंजूस वैश्य अपना संकल्प को पूर्ण नहीं कर सका। तब गुरु गोरक्षनाथजी ने ऐसे स्वार्थी वैश्य को सजा देने के लिये प्राकृतिक माया का खेल रचाया। और देखो सिद्धों कुछ ही दिन पश्चात् उस कदम्ब देश में दुर्भाग्य वश अनावृष्टि के कारण भयंकर अकाल पड़ गया। जिससे राज्य में बड़े-बड़े धनाढ्य निर्धनी हो गये, राज्य के कोठार खाली हो गये, जल की कमी से लोक आधी व्याधि से ग्रस्त हो गये राज्य में स्वार्थ वश चोरियाँ होने लगी अधर्मी लोग एक दूसरे को ठगने लगे। भूख-प्यास से व्याकुल ऐसे उपासमारी महामारी होने लगी। कुछ लोक तो राज्य छोड़कर अन्यत्र जाने लगे। ऐसे समय वैश्य श्रेष्ठी के पास जो भी धन धान्य, अनाज था वह सब नष्ट हो गया। तब श्रेष्ठी पति-पत्नी

ने भी विवशतावत राज्य छोड़ने का निर्णय करते हुए अपने पुत्र सहित दूसरे देश में निवास करने को निकल पड़े। साथ में घोड़ा गाड़ी में कुछ अन्न वस्त्रादि धन लेकर लम्बा प्रवास शुरू किया। चलते-चलते कड़कड़ाति धूप शुष्क गर्मी, उजाड़ खेतों पहाड़ों से प्रवास करते वह बड़े ही त्रस्त हो गये अब तो रस्ते में कुटुम्ब का भरण-पोषण भी दुर्भर हो गया तब गठडीओं में कुछ आवश्यक सामान लेकर वैश्य ने घोड़ा गाड़ी वही रस्ते में छोड़कर पति-पत्नि अपना पुत्र लेकर चल पड़े। जब वह घनघोर जंगल में आये तो एक नदी के किनारे विशाल गुलर का वृक्ष देखकर वही छाया में विश्रान्ति ली। जब रात्री विश्राम करने लगे तो मध्य रात्रि में वहां के जंगली लोगों ने उनपर हमला कर दिया और उनका सभी धन धान्य की गठडीयाँ चुराकर और दोनों श्रेष्ठी और मंगला को लेकर अपने अड्डे पर आये वहां इन्हें कैदी गुलाम बनाकर उनसे सभी प्रकार के काम करवाने लगे।

तब इस प्रसंग में वैश्य पति-पत्नि का पुत्र वही वृक्ष के नीचे छूट गया था। अब पुत्र वही पर भूखा-प्यासा तो कभी तड़पता हुआ रोने लगता। धीरे-धीरे वही गुलर के फल खाकर और नदी का ठण्डा जल पीकर रहने लगा कुछ समय पश्चात् बालक स्वस्थ होकर नित्य प्रति नदी पर स्नान और गुलर के फल खाने लगा अनायास ही वह व्रती होने लगा और इसी

पुण्यायी के कारणवश वहां एक समय कुछ नाथ साधु सन्त वही से गुजर रहे थे। उन्हें देखकर बालक ने उन्हें प्रणाम किया उन्हें गुलर के कुछ फल खाने को दिये जल पान कराया नाथ संत सन्तुष्ट होकर उन्होंने बालक को उपनयन संस्कार और मन्त्र दीक्षित करके उसे ॐ शिव गोरक्ष व्रत विधि बताया और कहा हे बच्चा तुमने हमें गुलर फल खिलाकर सेवा की तथा तुम भी इसी गुलर फल को ग्रहण करके महाव्रती हो गये अतः आज से तेरा नाम गुलर वृक्ष में रंजन करने वाला गुलरंजन हो गया भविष्य में तुम सुख-सम्पन्नता को प्राप्त होगा और आशीर्वाद देते हुए कहा हे गुलरंजन यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत बताये हुए विधि से हमेशा करते रहना तुम्हारा कल्याण होगा और अपने तीर्थ यात्रा को वह सब चले गये।

इधर यह वैश्य पति-पत्नि से वह जंगली लोग बहुत काम करवाते थे और नजर बन्द कैद में रखते थे। तब श्रेष्ठी वैश्य को याद आया कि हमने गुरु गोरक्षनाथ जी की व्रत कथा का पूजन नहीं किया। हम उन्हें भूल गये इसी का यह दुष्परिणाम है और वह पश्चाताप करने लगे। उन्होंने पुनः गुरु गोरक्षनाथ जी को क्षमा मांगते हुए प्रार्थना की कि हे नाथ जी महाराज हमने खोया हुआ पुत्र प्राप्त होने पर तथा इस बन्दी गृहसे मुक्त होने पर हम आपका व्रत अवश्य करेंगे। और वही पर शिव गोरक्ष, शिव गोरक्ष..... भजन करते हुए कष्ट भोगने लगे।

इधर धीरे-धीरे गुलरंजन बड़ा होने लगा वही पर एक छोटी सी कुटियां बनाकर रहने लगा नजदीक के ग्राम जाकर कुछ लकड़ियाँ कुछ फलों का व्यापार करके अपना उदर निर्वाह करने लगा। यह क्षेत्र मद्रदेश का ही एक हिस्सा था उन दिनों वहाँ के मद्रदेश के राजा मद्रसेन अपने सिपाहियों के साथ शिकार करने उसी जंगल में आये थे। शिकार की खोज में वह सब बिखर गये थे। राजा को प्यास लगी तो जल की खोज करते हुए वह अकेले ही इसी नदी के किनारे पहुँच गये और अपने घोड़े को जल पिलाकर खुद भी ठंडा जल पीकर सन्तुष्टि से वही पर विश्रान्ति लेने लगे इतने में वहाँ पर एक भयंकर सर्प ने आकर राजा को दंश कर दिया विष के प्रभाव से राजा मद्रसेन छटपटाने लगे और मूर्छित होकर गिर पड़े इतने में गुलरंजन जंगल से वापसी अपने कुटियां के तरफ लौट रहा था। राजा की इस अवस्था को देखते हुए सारा मामला उसी के समझ में आ गया और राजा को अपनी कुटियां में लाकर तीन दिन तक कुछ जंगली वनस्पति द्वारा इलाज करवाया और खूब सेवा की तब होश आने पर राजा मद्रसेन अत्यन्त प्रसन्न होकर गुलरंजन को आशीर्वाद और धन्यवाद देते हुए कहा कि हे गुलरंजन जब भी तुझे जरूरत पड़ेगी तुम हमारे राज महल अवश्य आना ऐसा आमंत्रण देकर अपने राज्य के तरफ लौट आये।

इधर तीन दिन से राज महल में भी सब चिन्तित थे। राजा को आते ही सर्वत्र खुशियाँ फैल गयी। राज्य साम-दाम-दण्ड से परिपूर्ण था। राजा मद्रसेन अपनी प्रजा को पुत्रवत् प्रेम करता था। राज्य में सब सुख सम्पदा थी कोई उपद्रव नहीं होता था। ना शत्रुता, ना चोरी मारी होती थी। जनता निरोगी, गुणों से सम्पन्न बल-थल से परिपूर्ण थे। राज्य का सुख समृद्धि से कारोबार चल रहा था राज दरबार में सर्व अधिकारी गुण सम्पन्न ईमानदार न्याय प्रिय थे उनमें राजा का एक वैश्य आमात्य वणिक अत्यंत गुणी ईमानदार सत्य सदाचारी था। सब वैश्य आमात्य को इज्जत मान देते थे। एक बार राजा मद्रसेन ने सभी अधिकारियों को मान सम्मान देकर बख्शीश भेंट दी जिसमें आमात्य को एक हथनी भेंट दी थी अतः योग संयोग से उसी समय आमात्य के घर में एक कन्यारत्न ने जन्म लिया। तब उस भेंट रूपी हथनी के उपलक्ष में कन्या का नाम भी गजवन्ति रखा गया। गजवन्ति का बचपन से उस हथनी से लगाव था। वह नित्य प्रति हथनी की सेवा तथा सखियों के साथ क्रीड़ा करती थी। अब तो गजवन्ति धीरे-धीरे बहुत सुन्दर और सयानी होने लगी।

एक बार उपवन में अपनी सखियों और हथनी के संग सब क्रीड़ा कर रहे थे।

खेलते-खेलते हथनी के कान के अन्दर एक घेरड़ (मक्खी) घुस गयी और अन्दर की अन्दर डंक मार के काटने लगी इस कारण हथनी परेशान होकर इधर-उधर भागने लगी वह बेभान होकर दूर-दूर भागती रही किसी के हाथ नहीं लगती थी। भागते-भागते वह बहुत दूर इसी जंगल में आयी जब उसे उन जंगली लोगों ने देखा तो उसे पकड़कर पानी में डुबाई तो घेरड़ (मक्खी) बाहर निकल गयी और हथनी शान्त हो गयी। हथनी को ऊँची कीमत में बेच देंगे ऐसा सोचकर उन जंगली लोगों ने उसे बन्दी बनाकर लाया और उसी स्थान पर रखा जहाँ वैश्य क्षेष्ठी और मंगला बन्दी थे और अब उस हथनी की यह वैश्य पति-पत्नि सेवा करने लगे।

इधर राज्य में आमात्य की लड़की गजवन्ति प्रिय हथनी के वियोग में दुःखी हो गयी अतः वह बीमार हो गयी। आमात्य ने राजा को यह सब घटना बताई तब महाराज ने सेनापति को सैन्य सहित हथनी खोजने के लिए जंगल में भेज दिया। सारे जंगल में खोजते-खोजते वह इन्हीं जंगली लोगों के स्थान पर पहुँच गये वहाँ हथनी को देखकर उन जंगली लोगों को पूछा तो उन्होंने विरोध किया। तब सेनापति ने उस स्थान को उजाड़कर वहाँ के सभी लोगों को बन्दी बनाकर और हथनी को लेकर राजा मद्रसेन के सम्मुख लाया। राजा ने आमात्य को हथनी

सुपुर्द की और उन सभी जंगली लोगों को बन्दी गृह में डाल दिया जिसमें वैश्य श्रेष्ठी और पत्नि मंगला भी बन्दी गृह में फंस गये। तब वह मनोमन गुरु गोरक्ष नाथ जी को करुणामय प्रार्थना करने लगे।

इधर गुलरंजन को आज व्यापार में बहुत अच्छी कमाई हुई थी। रविवार का दिवस था। अतः उसने सब साहित्य जुटाकर ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का सम्पूर्ण पूजन विधि अपने कुटियां में किया और अपने माता-पिता की याद आने लगी तो उसने प्रार्थना कि हे गुरु गोरक्षनाथ जी मेरे माता-पिता की मुझसे भेंट हो जाये। अतः गुरु गोरक्षनाथजी प्रसन्न होकर उसे माता-पिता के भेंट का आशीर्वाद दिया।

इधर राज महल में जब राजा प्रातः नित्य नियमानुसार मन्दिर में पूजन कर रहा था। तब उसे आकाशवाणी हुई कि हे राजन् तुम्हारे बन्दी गृह में जो निर्दोष वैश्य पति-पत्नि बन्दी बने हुए हैं। उन्हें बन्धनमुक्त कर दो तेरा कल्याण होगा। तब राजा ने बड़े आदर सहित उन श्रेष्ठी वैश्य और मंगला को दरबार में बुलाया और पूछा कि तुम दोनों कौन हो कहा से आये हो? तब वैश्य श्रेष्ठी ने घटित सब वृत्तान्त बताया। तब राजा को बड़ा पश्चाताप हुआ उन्होंने उन्हें बन्धन मुक्त कराकर अपने आमात्य वैश्य को इनकी व्यवस्था करने को कहा तब आमात्य इन्हें

अपना समान समझकर घर ले आये और हथनी, कन्या, गजवन्ति एवं यह दोनों श्रेष्ठी ऐसा सह परिवार सुख सम्पन्न से रहने लगे।

कुछ दिन पश्चात् एक बार श्रेष्ठी वैश्य और मंगला ने अपनी सेवा करती हुई सुन्दर लावण्यवति गजवन्ति को देखते हुए मंगला ने अपने पति को कहा हे स्वामी अगर आज हमारा पुत्र होता तो इस सुन्दर गजवन्ति को हम अपनी बहु बना के पुत्र से विवाह कराते लेकिन ऐसा सोचते-सोचते वह पुत्र वियोग में रोने लगी। तब श्रेष्ठी ने उसे समझाते हुए कहा “हे भाग्यवान तुम ऐसे दुःखी नहीं होना मुझे अब भी याद है कि जब हम जंगली बन्दी गृह में गुलाम थे तब हमने ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा करने की मन्त मांगी थी। अतः बन्दी गृह से मुक्ति मिल गयी है तो हमें ॐ शिव गोरक्ष व्रत अवश्य करना चाहिए। जिससे हमें हमारे खोये हुए पुत्र की प्राप्ति होकर हमारी सारी समस्यायें दूर हो। फिर एक दिन उस आमात्य को उन्होंने सब वृत्तान्त और गोरक्ष व्रत के विषय में बताया। तब आमात्य वैश्य बहुत ही प्रसन्न होकर व्रत कथा पूजन करने का निश्चय किया और शुभ मुहूर्त रविवार देखकर भिक्षुक ब्राह्मण को बुलाकर वह ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का बहुत उत्तम उत्सव मनाया सब परिवार और सगे सम्बन्धी मिलकर व्रत सम्पन्न हुआ प्रसाद वितरण होने पर ब्राह्मण ने देखा कि गजवन्ति और

सखियाँ मिलकर हथनी के साथ क्रीड़ा कर रहे हैं, तब उन्होंने आमात्य को कहा कि हे श्रीमान् अब आपकी लाडली और सुन्दर रूपवती गजवन्ति सयानी हो गयी है। इसका विवाह करना चाहिए। इसका इस हथनी के साथ ऐसा लगाव देखते हुए हम एक सरल सुझाव देते हैं कि इसी मास में हस्त नक्षत्र के समय काल में इस हथनी की सूंड में वरमाला देकर सब राज्य में घुमाओं जिस युवक के गले में यह माला डालेगी उसी के साथ इस गजवन्ति का विवाह करा देना चाहिए। यह उत्तम सुझाव सभी वैश्य परिवार को अच्छा लगा और उन्होंने वैसे ही उस नक्षत्र के दिन किया।

इधर पुत्र गुलरंजन अपने व्यापार निमित्त उसी गाँव में आया हुआ था। ठीक उसी समय आमात्य के अनुयायी तथा हथनी ने उसी गाँव में सूंड में वरमाला लेते हुए फेरी लगा रही थी। बाजार चौक में आये तो वहाँ गुलरंजन को देखकर हथनी ने उसके गले में वर माला डाल दी तब गुलरंजन तथा सभी ग्रामस्त बड़े विस्मित हुये तब आमात्य के अनुयायी ने सब कुछ बताते हुए। गुलरंजन को हथनी के ऊपर बिठाके राज्य में ले आये और जब उसे भव्य स्वागत करते हुए आमात्य वैश्य के घर लाया गया। तब उसे देखते ही वैश्य श्रेष्ठी व पत्नि मंगला ने उसे तुरन्त पहचान लिया और अपने गले लगाके सभी को यह हमारा खोया हुआ पुत्र है ऐसे

बतलाया। तब सभी आनन्द विभोर हो गये। आँखों में खुशी के आँसु आते हुए उन्होंने भगवान गोरक्षनाथजी को मनोमन नमस्कार किया।

अतः राजा मद्रसेन को खबर भेजी गयी। भिक्षुक ब्राह्मण को भी बुलाया गया और शुभ घड़ी अनुसार पुत्र गुलरंजन और गजवन्ति का विवाह बड़ी धूमधाम से किया गया जिसमें महाराज मद्रसेन, सेनापति तथा मंत्रीगण दरबार के सभी कर्मचारी तथा सगे सम्बंधी राज्य की प्रजा सभी ने आकर शुभ आशीर्वाद दिया। जब राजा को वन्दना करने के लिये वर और वधु गये तो राजा ने गुलरंजन को देखते ही उसे पहचान लिया और वहां उपस्थित सभी को बताया कि इस गुलरंजन ने कुछ दिन पहले जंगल में मुझे सांप ने डस लिया था तो इसी ने मुझे तीन दिन उपचार सेवा करके बचाया था। राजा अत्यंत कृतार्थ हुआ और कहा हे प्रजाजनों इन दोनों वरवधु को आशीर्वाद देता हूँ और विवाह के उपलक्ष्य में मैं इन्हें भेंट स्वरूप इस युवक गुलरंजन को हमारे राज्य का मुख्य आमात्य की लिये नियुक्त करता हूँ और उन्हें नया भवन देकर सारी उत्तम व्यवस्था करा दी। माता-पिता और पत्नि तथा हथनी सह वह गुलरंजन सुख सम्पन्नता से रहने लगे।

इस प्रकार राजा खुशी में वैश्य श्रेष्ठी ने उस नये भवन में ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा

का पूजन करने हेतु शुभ दिन देखकर सभी राजा प्रजा को आमंत्रित किया। सुन्दर मण्डप रोशनाई और फूलों से सुशोभित सुगंधित अत्यन्त शोभायमान परिसर में बीचों बीच गुरु गोरक्षनाथजी की कलश स्थापना कर उत्तम पूजन किया फिर व्रत कथा वाचन-श्रवण-आरती-प्रसाद वितरण किया। उस उत्साह भरे आनन्द वातावरण में आकाश से पुष्पवृष्टि हुई और श्री शुम्भजती गुरु गोरक्षनाथजी के कृपा आशीर्वाद से सभी आनन्द आनन्द सुख सन्तुष्टि से रहने लगे।

तब योगी गुरु भक्त योगी भर्तृहरिनाथजी ने कहा कि हे सिद्धों इस प्रकार श्री गुरु गोरक्षनाथजी के व्रत कृपा अनुकम्पासे वह वैश्य श्रेष्ठी पति-पत्नि बन्दी गृह से मुक्त होकर उन्हें खोया हुये अपने पुत्र की प्राप्ति हुई उसी प्रकार उसी व्रत कथा के पुण्य स्वरूप उनको अच्छी सुस्वरूप बहु अथ पुत्र का विवाह और गुलरंजन को उत्तम नौकरी मिल गयी इस प्रकार सभी संकट नष्ट होकर वह सब सुखी हो गये।

॥ इति तृतीय अध्याय ॥

“जय जय नाथ, शिव गोरक्षनाथ..... जय जय नाथ, शिव गोरक्षनाथ.....”

♦

चतुर्थ अध्याय

36

मानव प्राणी मात्र के कल्याण करने वाले श्री योगी भर्तृहरिनाथजी, वहां के संत समागम मेले में उपस्थित नाथ सिद्धों तथा भक्तों से ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का कालविधि और व्रत महात्म्य का बखान कर रहे थे। उन्होंने बड़े प्रेम से कहा -

पूर्वकाल में विराट समुद्र के किनारे सिंहलद्वीप नाम का एक अतिशय सुन्दर द्वीप था वहां के नयन मनोहर कदली बन में, श्री सिद्ध योगी मन्जुनाथजी जो माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के प्रधान शिष्य थे। वह अपने शिष्यों को तथा भक्तों को ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा सुना रहे थे। उस निसर्ग रम्य स्थान में शीतल-शीतल वायु लहरीओं में सभी भक्त शान्ति एवं एकाग्र चित्त से व्रत कथा सुन रहे थे। श्री मन्जुनाथजी के मीठे-मीठे शब्द स्वरों का सब रसपान कर रहे थे वहाँ जन मन रंजन अतः ज्ञान वर्धक कथा ने सबका मन मोह लिया था। उस शान्त एकान्त में शिव गोरक्ष नाम का गान हो रहा था। सब आनन्दी आनन्द मंगल में चल रहा था। इतने में अचानक वहां के वातावरण में बदलाव होने लगा, बड़ी तेज हवा चलने लगी, देखते-देखते वहीं आस-पास एक तुफान आया सारा वातावरण तहस-नहस होने लगा सारे श्रवणार्थी भक्त बड़े आश्चर्य से वह सब देख रहे थे। उस तूफान में से एक चक्रवात

(भंवर) आने लगा तो श्री सिद्ध मन्जुनाथजी ने अपने तपोबल से उस परिस्थिति का कारण जान लिया, उन्होंने अपने कमण्डलु में से गंगाजल हाथ में लेकर उस तूफानी चक्रवात (भंवर) के ऊपर छिड़क कर फैंका तो उसमें से जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजे सुनाई देने लगी “बचाओ बचाओ मुझे बचाओ” और देखते-देखते वहां एक प्रेतात्मा बना ब्राह्मण प्रगट हुआ। सभी भक्तों को दिखाई देने लगा। वह भयंकर विचित्र प्रेतात्मा का प्रगट रूप देखकर सभी भय और आश्चर्य से स्तब्ध रह गये। अतः सिद्धयोगी मन्जुनाथजी ने उस प्रेतात्मा की अवस्था को देखते हुए उसे इस दशा का कारण पूछा तो वह प्रेत रूपी ब्राह्मण बोलने लगा “हे नाथ जी महाराज मैं एक ब्राह्मण कुल में जन्मा हुआ कर्मकाण्डी पुरोहित था और मैं पुण्य भूमि काशी क्षेत्र में पतित पावनी माँ गंगा तीर के मनीकर्णीका घाट पर पुरोहित का कर्म करता था मैंने अनेक भक्तों, लोगों से बड़ा पाखण्ड करके बहुत सारा धन कमाया। घाट पर आये हुए अनेकों यात्री तथा यजमान को मैं अनेकों मार्गों से ठगता रहा और इस प्रकार लोभ-मोह में अनेकों पापों के कारण मेरी यह दुर्दशा हुई है। मुझे इस प्रेत योनी से मुक्ति दिलाने का कार्य केवल आप ही कर सकते हो। मैं इस दशा से अत्यंत दुःखी हूँ। ब्राह्मण कुल का होने से मैं आपके पास आ सका और आपके शरण में आया हूँ। कृपया मेरा उद्धार करो।

अतः योगी भर्तृहरिनाथजी ने कहा हे सिद्धों, संत जन बड़े ही दयालु होते हैं और नाथ सिद्ध तो बड़े कृपालु होते हैं। उस प्रेतात्मा की ऐसी दुर्दशा को देखते हुए योगी मन्जुनाथजी को उस पर दया आ गई उन्होंने एक आसन उसके तरफ देकर उस प्रेतात्मा ब्राह्मण को कहा “कि तुम इस आसन पर बैठ जाओ और मैं जो भी सभी भक्तों को यह ॐकार आदिनाथजी ने, योगिनी उदयनाथ पार्वतीजी को बताये हुए। ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का कथन कर रहा हूँ। तुम भी इन सभी के साथ श्रवण करो तो तुम उत्तम गति को प्राप्त होगे। तब वह प्रेतात्मा कहने लगी” हम अतृप्त प्रेतात्मायें एक जगह रुक नहीं सकते, सो तो हम अस्थिर होकर भटकते रहते हैं। अतः आपकी यह व्रत कथा कैसे सुनु ? तब स्मिंत हास्य करते हुए सिद्ध मन्जुनाथजीने अपने तपोबलपूर्वक स्तम्बन अस्त्र से बभूत अभिमंत्रित करके उस आसन के ऊपर प्रक्षेपण (फूंक) कर दिया और उसी समय प्रेतात्मा स्तम्बित होकर उस आसन पर स्थिर हो गयी, अब बाकी सम्पूर्ण वातावरण पूर्ववत् शान्त और रमणीय हो गया और श्री गुरुवर मन्जुनाथजी ने अपने सुस्वरों से वह ॐ शिव गोरक्ष व्रत पूजन और कथा निरूपण करने लगे सभी भक्त भक्ति भाव से वह कथा श्रवण कर रहे थे। वह ब्राह्मण प्रेतात्मा भी बड़ी तनमयता से व्रत कथा का अवलोकन कर रहा था जैसे-जैसे वह कथा में एकाग्र होने लगा

वैसे-वैसे वह प्रेतात्मा की होने वाली दाह शान्त होने लगी और वह आत्मविभोर होने लगा अपने किये कर्म पर पश्चाताप करने लगा और काम, क्रोध, मोह, लोभ सभी दुगुणों से विरक्त होकर वह ब्राह्मण कुल प्रेतात्मा, शुद्धात्मा होने लगा, जैसे-जैसे गुरु गोरक्ष कथा का वह रसपान श्रवण करता रहा वैसे-वैसे वह एक परमशान्ति को प्राप्त होने लगा और वह सभी भक्तों सम-सहित गुरु गोरक्षनाथजी के भजन में रम गया। जब व्रत कथा की पूर्णता होने लगी तो वहां के शंख के जल को सभी के ऊपर श्री मन्जुनाथजी ने पुष्प द्वारा सिंचन किया।

अतः वहां के वातावरण में सभी ओर से कर्पूर सुगंधीयुक्त सुगंध आने लगी थी भक्तों में एक शान्त चित्त-आनन्द तथा शान्ति का आभास हो रहा था। इतने में वह प्रेतात्मा आनन्द-विभोर होकर “शिव गोरक्षम्..... शिव गोरक्षम्..... भजन गाते हुए नृत्य करने लगा। इतने में वहां धीरे-धीरे एक दिव्य प्रकाश स्रोत के साथ-साथ उसकी ज्योति स्वरूपी आत्मा आकाश मण्डल की तरफ जाने लगी। तब सभी भक्त जन अवाक् हो देखते ही रह गये। सभी जन दोनों हाथ जोड़े उस आकाश गमणीय आत्मा को और सिद्ध योगी मन्जुनाथजी को प्रेम भक्ति सहित नमस्कार करने लगे। तब सत्गुरु देव मन्जुनाथजी स्मित हास्य करते हुए अपने अभय हस्त से सभी को शान्ति सह आशीर्वाद दे रहे थे और अब वह आकाशीय ज्योति

वह शुद्धात्मा सत स्वरूप में विलीन हो गयी।”

इस प्रकार सब सांगता होने पर वहां ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का प्रसाद वितरण होने लगा। श्री ब्रह्मदर्शी मन्जुनाथजी वह सुगंधित मिष्ठान रोट प्रसाद सभी भक्तों को देने लगे। एक-एक करके सभी भक्त श्री गुरु गोरक्षनाथ के पूजन कलश को भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हुए और श्री नाथ जी को नमस्कार करते हुए बड़ी श्रद्धा से प्रसाद लेकर जाने लगे। अन्त में एक भट्ट नाम के ब्राह्मण दम्पति श्री योगी मन्जुनाथजी के सन्मुख प्रसाद लेने को आये और उन्होंने कहा “हे महात्मन श्री नाथजी हमने जो घटना देखी तो केवल व्रत सुनने का इतना फल है तो व्रत करने का कितना फल होगा? अतः कृपया हमें भी व्रत कथा का सम्पूर्ण विधि बतलावो, तब श्री नाथजी कहने लगे। तुम व्रत को क्या करोगे। व्रत को लोगे, फल को भोगोगे। लिया हुआ व्रत को छोड़ दोगे। तब उस ब्राह्मण ने बड़ी करुणा भाव से कहा हे श्री नाथ जी महाराज मुझे केवल वेदानन्द नाम का एक ही पुत्र है। जो मेरे ब्राह्मण कुल का वंश है। वह अत्यंत दुःखी है, उसे कोई असाध्य बीमारी ने घेरा है। बहुत दवा और दुवाओं का इलाज किया किन्तु वह ठीक नहीं हो पा रहा है। हमने सोचा कि गुरु गोरक्षनाथजी के कृपा से वह ठीक हो जायेगा। अतः हम भी उस पुत्र के लिये यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा को

करना चाहते हैं। इस कारण आप हमें आशीर्वाद देकर यह व्रत का विधि विधान बतलाने की कृपा करें। हम इस व्रत को कभी नहीं भूलेंगे। ऐसे विनय पूर्ण बात सुनकर करुणा निधान श्री मन्जुनाथजीने उन भट्ट ब्राह्मण दम्पति को विस्तार से व्रत कथा का विधि विधान बताया और कहने लगे कि हे भक्त वास्तव में जिन-जिन प्राणियों को इस व्रत कथा का प्रसाद प्राप्त हुआ है। उन-उन व्यक्तियों ने उत्तम भक्ति भाव से प्रत्येक रविवार को या शुभ मुहूर्त दिन का सम्पूर्ण दिन व्रत करते हुए पूजन तथा कथा का निरूपण करना चाहिए। जिससे श्री शम्भु-जती गुरु गोरक्षनाथजी की उनपर असीम कृपा होती रहेगी। इस प्रकार उन भट्ट ब्राह्मण दम्पति ने व्रत कथा को करने का संकल्प करते हुए अपने गृह आये और शुभ दिन रविवार देखकर संध्या-अर्ध्या इत्यादि नित्यकर्म निवृत्त होकर अपने पुत्र वेदानन्द सहित व्रत को सम्पन्न किया और पुत्र ने भी व्रत कथा का पूजन-कथन-श्रवण मनन करते हुए प्रसाद को ग्रहण किया और रात्री को सगे सम्बन्धी सह गुरु गोरक्षनाथजी का भजन कीर्तन करते हुए जागरण किया। इस प्रकार बड़ी भक्ति भाव से प्रत्येक रविवार को व्रत सम्पन्न होने लगा धीरे-धीरे पुत्र के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा तब तो वह और भी अपने सगे सम्बन्धीओं को मित्र परिवार को आमंत्रित करते हुए व्रत को सम्पन्न करने लगे जिसमें दान धर्म भण्डारा भी करने लगे ऐसा

सवा वर्ष होने पर उस पुत्र वेदानन्द का वह असाध्य रोग सम्पूर्ण रूप से ठीक हो गया और सब कुछ सुख सम्पन्नता से रहने लगे। अब वेदानन्द बड़ा हो गया था।

एक समय भट्ट ब्राह्मण परिवार कदली क्षेत्र में गुरुदेव श्री मन्जुनाथजी के दर्शन हेतु पधारे। दर्शन मेला होने के उपरान्त गुरुदेव ने गुरु गोरक्षनाथ पूजन पाठ होने पर कुछ सामग्री वेदानन्द को देकर इसे समुद्र में प्रवाहित करने को कहा जब वेदानन्द समुद्र पर आया तो उसने देखा कि उस समुद्र तट पर एक सुलक्षणी कन्या अपनी सखियों के साथ समुद्र पूजन कर रही थी। वह पूजन करते समय समुद्र की एक बड़ी लहर आयी और वह सुन्दर कन्या उस जलभरी लहर में डुबने लगी यह देखकर उसकी सखियों ने आवाजे दी किन्तु वह कुछ न कर सकी और वह कन्या की माता-पिता जी को बुलाने चली गयी। यह सब पुत्र वेदानन्द ने देखा तो उसने बड़ा साहस करके तैरते हुए उस कन्या को बचाकर समुद्र किनारे लाया और उसे स्वस्थ किया। इतने में कन्या के माता-पिता भी आ गये। उन्होंने वेदानन्द को धन्यवाद देकर उसका घर-बार पूछा तब वेदानन्द ने बताया कि मैं और मेरे मातृ-पितृ श्री गुरुदेव जी के दर्शन के लिये आये हुए हैं। तब वह सब श्री मन्जुनाथ जी के आश्रम पर पधारे। यहां पूजन दर्शन होने पर सभी ने मिलकर बड़े हर्ष के साथ वेदानन्द और कन्या के विवाह को स्वीकार किया। तब

अपने ग्राम आकर पुत्र का विवाह धूमधाम से सम्पन्न किया और श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की अनुकम्पा से वह भट्ट ब्राह्मण परिवार सुख-सम्पन्नता से भरपूर हो गया।

इस प्रकार योगी भर्तृहरिनाथजी ने सभी सिद्धों को ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का महात्म्य सुनाते-सुनाते वह शिव गोरक्षनाथजी की जय जयकार करने लगे और सभी नाथ सिद्ध और श्रोतागण आनन्द मग्न होकर गोरक्षनाथजी का कीर्तन-भजन करने लगे।

॥ इति चतुर्थ अध्याय ॥

तारणहारी अलख निरंजन.... पालनहारी अलख निरंजन.... अलख निरंजन.... अलख....

पंचम अध्याय

श्री सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथजी ने, सिद्ध चौरंगीनाथजी सह सभी सिद्धों को कहा ! हे प्रिय सिद्धों योगेश्वरों मैं एक और वृत्तान्त बतलाता हूँ। सिद्धोऽऽ सहि कर लेना।

पूर्व समय काल में एक अत्यन्त रमणीय क्षेत्र चिनापट्टन में विशाल समुद्र के किनारे पर एक चट्टान के ऊपर अपना आसन स्थिर कर जगत् विख्यात प्रत्यक्ष हनुमानजी के अवतार

सिद्ध योगी बीरबंकनाथ जी जो गुरु गोरक्षनाथजी के प्रिय शिष्य थे। वह सत्गुरुजी के स्मरण ध्यान समाधि में रमे हुए थे, लीन हो गये थे। प्रातः का रक्त बिम्ब सूर्य भगवान अपनी लालिमा फैलाते हुए समुद्र में से प्रगट हो रहे थे। वातावरण में उस तपस्वी के प्रभाव से एक नवचैतन्य और निरामय शान्ति का आभास हो रहा था। इतने में एक नयन मनोहर अत्यन्त सुन्दर जिसको देखकर सभी आकर्षित हो जाये ऐसी सुन्दर कन्या वहां समुद्र किनारे आयी थी। वह एक शुद्र घर की कन्या थी और रूपवन्ति नाम से सभी उससे स्नेह करते थे। वह पूर्व जन्मा शुभ संस्कारी, शुभ लक्षणी और शुभ विचार वाली कन्या होने के कारण वहां सूर्यनारायण को अर्घ्य देने तथा दर्शन नमस्कार करने आया करती थी। अब अर्घ्य देकर दर्शन करते समय उसने देखा कि उस चट्टान पर बैठे तपस्वी महात्मा अपने ध्यान समाधि में लीन थे। इतने में एक बड़ा कर्कट खेकड़ा जल से निकलकर उस महात्मा बीरबंकनाथजी के पैर के अंगूठे को काट रहा था अतः वहां खून भी आने लगा। यह देखकर रूपवन्ति का हृदय पिघल गया वह तुरन्त बिना सोचे वहां जाकर उस खेकड़े को खींचकर दूर फेंक दिया। उसी क्षण बीरबंकनाथजी समाधि से जाग्रत होकर, वहां देखते हुए सारा मामला समझ गये। जब कन्या रूपवन्ति आदर सहित नमस्कार करने लगी और सभी वृत्तान्त अपने भोले भाले स्वभाव वश

कहने लगी। तो सिद्ध बीरबंकनाथजी प्रसन्नता से कहने लगे हे माता तुम्हारे इस धैर्य और सहयोग से मैं प्रसन्न हूँ अतः तुम्हे क्या आशीर्वाद चाहिए? तुम्हें जो भी वर मांगना हो वो तुम मांग लो।

तब रूपवन्ति गड़बड़ा गयी। क्या मांगू सोचने लगी। उसने राजा महाराजा राज-पाट इ० बातों को सुना हुआ था और स्त्रिसुलभ स्वभाव से अपने सपने सजाये थे। तब उसने बिना सोचकर एक दम से कह दिया हे महाराज जी मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि मुझे जो भी पुत्र होगा। वह बड़ा पराक्रमी-धर्मशील-गुणवान होगा और राज पाठ संभालने वाला राजा भी होगा। यही नारी का सौभाग्य कर्तव्य धर्म और मेरी सार्थकता होगी। ऐसे वचन एक शुद्ध कन्या के मुख से सुनकर बीरबंकनाथजी ने बड़ी प्रसन्नता से और स्मित करते हुए कहा हे माता तुमने यथा योग्य वर मांगा है। अतः मैं तुम्हे एक ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का विधि विधान बतलाता हूँ जो प्रत्यक्ष भगवान शिवजी ने माता उदयनाथ पार्वती को सुनाया था। यह व्रत तुम नित्य नियम से करोगी तो तुम्हारी सभी मनोकामनायें पूर्ण होगी और उन्होंने व्रत विधि विस्तार से बताके वहां से शीघ्र ही दक्षिण की ओर रामेश्वरम् के दर्शन के लिये चले दिये। रूपवन्ति बहुत आनन्दित हुई। जिस चट्टान पर उसे व्रत का आदेश मिला था उसी चट्टान पर वह नित्य

प्रति सूर्य दर्शन के पश्चाद ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा श्रद्धा विश्वास आनन्द से किया करती थी और प्रसाद तथा कुछ दान धर्म अपने सखियोंको रिश्तेदारो तथा गाँव वालों को दिया करती थी। सभी उसके गुणों का कौतुक करते थे। व्रत करते-करते सवा साल कैसे बीत गया पता नहीं चला एक दिन ऐसे ही रूपवन्ति संध्या के समय उस समुद्र किनारे ॐ शिव गोरक्ष व्रत की कथा कर रही थी। कुछ सखियाँ कथा सुन रही थी। वातावरण मंगलमय था। उसी समय समुद्र से एक जहाज बड़े राजपाठ के और ठाठ के साथ वहाँ किनारे पर लगा। जिसमें कलिंग देश का राजा जो चेत क्षत्रिय उच्च कुल का वंशज था। जहाज में से उतरते ही राजा ने इस अति सुन्दर मन को मोहने वाली रूपवन्ति को अपनी सखियों में कथा करते हुए देखा। राजा के मन में उसके प्रति प्रीति तथा आर्कषण हुआ। उन्होंने रूपवन्ति के माता-पिता से स्वीकृति लेकर उसे अपने कलिंग देश में ले आया और गंधर्व विवाह किया। प्रसन्नता और आनन्द के साथ राजा रानी रूपवन्ति रहने लगे और बीरबक नाथजी के वरदान से और गुरु गोरक्षनाथजी के कृपा से उन्होंने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। उस पुत्र को उन्होंने सर्वगुण युक्त शिक्षा संस्कार दिये वह पुत्र सर्वगुण सम्पन्न और बुद्धिमान एवं सुन्दर सूर्य-प्रकाश के समान बड़ा तेजवान था। जब उसका सागरसेन नाम का नाम-संस्कार किया। तब बड़ी

धूमधाम से रूपवन्ति ने ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा पूजन किया तब राजा अपनी पूर्व पत्नि महारानी जयलक्ष्मी को लेकर आये। दर्शन होकर राजारानी ने व्रत का महात्म्य पूछा तब रूपवन्ति ने पूर्व घटित सब वृत्तान्त उन्हें सुनाया। तब राजा ने कहा हे रूपवन्ति तुम्हारी बड़ी महारानी को भी अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई अतः इसे भी पुत्र प्राप्ति होने पर हम यह शिव गोरक्ष व्रत को अवश्य करेंगे तब प्रसन्न अन्तकरण से रूपवन्ति ने जयलक्ष्मी महारानी को सब व्रत विधि बतायी और गुरु गोरक्ष नाथजी की कृपा से उसी साल में महारानी जयलक्ष्मी ने भी एक सुन्दर पुत्ररत्न को जन्म दिया। तब राजा-रानी जयलक्ष्मी और रानी रूपवन्ति बहुत आनन्दपूर्वक होकर राजी खुशी में राजपाठ चलाने लगे।

दोनों राजकुमार शुभ संस्कारों से बड़े होने लगे। तदपश्चात् जब जयलक्ष्मी के पुत्र का नामकरण किया और उसका नाम प्रशान्तसेन रखा उस वक्त रूपवन्ति ने ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा की याद दिलायी। किन्तु स्वभावता मत्सरी महारानी ने राजपाठ के घमंड से रूपवन्ति को धुत्तकारते हुए कहा कि व्रत की इतनी भी क्या जल्दी है। योग्य समय आने पर हम व्रतोत्सव कर लेंगे। ऐसे टालते हुए उसने रूपवन्ति से रूखा व्यवहार किया क्योंकि महाराज उस सुन्दर रूपवन्ति से तथा उनका गुणवान पुत्र सागरसेन से खूब लगाव रखते थे

और हर कार्य में उन्हें महत्व देते थे तथा प्रेम से राजकाज भी सिखाते थे। यह सब जयलक्ष्मी एवं उसके पुत्र को सहन नहीं होता था तथा मत्सर-जलन से परेशान हो जाते थे। वह रूपवन्ति और सागरसेन से हमेशा सौतेला व्यवहार करते थे क्योंकि उन्हें वह शुद्र समझते थे और अपने सब व्यवहार से अलग रखते थे। यह दुरियाँ उन दोनों राजकुमारों में भी उजागर होने लगी।

कुछ समय पश्चात् महाराज एक असाध्य बीमारी से ग्रसित हुए उनकी बीमारी दिन ब दिन बढ़ने लगी और धीरे-धीरे राज-काज में बहुत सारी कठिनाईयाँ एवं व्यवधान भी आने लगे और यह सब गुरु गोरक्षनाथजी का व्रत न करने का परिणाम था। जो कि जयलक्ष्मी ने व्रत पूजन का अपमान किया था। अतः गुरु गोरक्षनाथजी ने वृष्ट होकर सब विपरित परिस्थितियों का निर्माण किया। अतः महारानी जयलक्ष्मी महाराज का इलाज करने लगी, राज्य के वैद्य-दवा, दुवा सब प्रकार से इलाज हो रहा था। धीरे-धीरे जयलक्ष्मी ने राज्य का कारोबार अपने हाथ में कर लिया और राज्य के मन्त्री-महामन्त्री-सेनापति इत्यादि सभी को अपने अधिकार में कर लिया। समय का फायदा उठाते हुए उसने रानी रूपवन्ति तथा पुत्र सागरसेन के ऊपर गलत दोषारोपण करते हुए देश से बाहर कर दिया और अपने पुत्र प्रशान्तसेन को राज गद्दी के लिये नियुक्त कर दिया। बढ़ती हुई असाध्य बीमारी के कारण

असमर्थ महाराज कुछ नहीं कर पाते थे। देश के बारह निकालने के बाद रूपवन्ति और पुत्र सागरसेन राज्य से दूर जंगल में जाकर निवास करने लगे और कष्ट करके उदर निर्वाह करने लगे इनके पक्ष में राज्य के कुछ लोग भी थे तथा जंगल में भी यह सागरसेन सभी से मित्रता करने लगा। रानी रूपवन्ति को जब एकान्त में ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा का स्मरण हुआ। तो माता अपने पुत्र के साथ रोज नित्य नियम से व्रतोत्सव बड़ी श्रद्धा भाव से करने लगी और ऐसे एक साल तक व्रत कथा करते रहे। एक समय दोनों माँ-पुत्र व्रत कथा की विधि कर रहे थे। तब कृपानिधान श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथजी एक सन्त के रूप में वहाँ पधारे। तब राजकुमार सागरसेन ने उत्तम आतिथ्य करते हुए उन्हें भोजन दान दक्षिणा देकर और श्रद्धा पूर्वक नमस्कार किया। सन्त रूपी गोरक्षनाथजी ने पूछने पर रूपवन्ति ने राज्य, बीमार राजा, सौतन व्यवहारी जयलक्ष्मी इत्यादि सब वृत्तान्त उन्हें निवेदन किया। तब गुरु गोरक्षनाथजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा और पुत्र सागरसेन को कहा कि हे सागरसेन तुम यह व्रत कथा को करते हुए नित्य सात अनाज के आटे की गोलियाँ जल में मछलियों को खिलाओं। तुम जितनी गोलियाँ खिलाओगे उतने ही तुम्हें मित्र सहयोगी-सैनिक और जनशक्ति प्राप्त होगी उन्हे योग्य शिक्षा देकर सशक्तवान होने पर तुम अपने राज्य पर

चढ़ाई करो, तुम्हारी विजय होकर राज गद्दी का अधिकार प्राप्त होगा और प्रजा सुखी हो जायेगी ऐसा आशीर्वाद तथा वरदान देकर सन्त रूपी गुरु गोरक्षनाथजी अर्न्तध्यान हो गये।

अतः सन्त के वरदान से राजकुमार सागरसेन में और धैर्य तथा बल प्राप्त हुआ और बड़े भक्ति भावना से व्रत कथा करते हुए नित्य मछलियों को गोलियाँ खिलाता रहा जैसे-जैसे बढ़ते हुए दिनों में मछलियों को गोलियाँ खिलाता रहा वैसे-वैसे उसका सैन्यबल बढ़ता रहा और भी राज्य के कुछ अनुयायी तथा कुछ अधिकारी उसके पक्ष में हो गये। युद्ध की दीक्षा-शिक्षा यथा उचित तैयारी करते हुए। एक दिन उचित समय देखकर राज्य पर धावा बोल दिया। अचानक राज्यपर चढ़ाई होते देखा तो प्रशान्तसेन तथा महारानी जयलक्ष्मी आश्चर्य तथा भ्रमित होकर कुछ कर नहीं पाये दोनों राजकुमारों में धर्म-अधर्म का युद्ध हुआ। “अलख निरंजन, अलख निरंजन” जय शिव गोरक्षम् जय शिव गोरक्षम् के नारे लगाते हुए सागरसेन के सैन्य युद्ध करते हुए विजयी श्री को प्राप्त हुए और धर्म की जीत हो गयी। सभी प्रजा आनन्दित हो गयी और राजकुमार सागरसेन का राज्याभिषेक बड़ी धूमधाम से किया गया। जब प्रशान्तसेन और उसकी माता जयलक्ष्मी ने सर्वसन्मुख क्षमा मांगी तो राजा सागरसेन ने उन्हें एक अच्छा राजमहल देकर उनकी यथोचित व्यवस्था कि अपने पिता महाराज के इच्छा अनुसार सागरसेन साम, दाम, दण्ड सहित न्यायपूर्ण राज्य-कारोबार करने लगा और राज्य में सुख शान्ति आ गयी। तब इस राज

परिवार ने सभी राज्य-जनता को आमंत्रित करते हुए ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया और राज्य में आनन्द-आनन्द हो गया।

अन्त में महान परंयोगी भर्तृहरिनाथजी कहने लगे हे नाथ सिद्धों-भक्तजनों जो भी नर नारी एवं मनुष्य प्राणी ॐ शिव गोरक्षनाथजी का यह परम दुर्लभ व्रत कथा को करता है उनके सभी प्रकार के मनोरथ सिद्ध होकर सुख को प्राप्त होता है। इस प्रकार जो प्राणी व्रत कथा को श्रवण और प्रसाद को प्राप्त करता है। वह प्राणी धन-धान्य ऐश्वर्यादि सब कुछ प्राप्त करके सुखी हो जाता है। उन व्रतीभक्तों के सभी संकट नष्ट होकर शत्रु भी मित्र बन जाते हैं और धर्म की जय होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसी प्रकार ॐ शिव गोरक्ष व्रत कथा पूजन-कथन-श्रवण इत्यादि भक्ति करने पर मनवाञ्छित फल भोगकर अन्त में कैलास वायु लोक में जाकर परम सुख को प्राप्त करता है। हे सिद्धों हे भक्तो इस प्रकार यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत को आप नाथ सिद्धों भक्त सभी से कहा है। तो उसे करने वाले समस्त प्राणी संसारी भव सागर से पार होकर सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त हो जाते हैं और इस घोर कलियुग में तो विशेष फल को देने वाला यह ॐ शिव गोरक्ष व्रत ही सिद्ध है।

घोर कली कल इस युग के माही। ॐ शिव गोरक्ष व्रत होये परम सहायी॥१॥

श्री नाथ कथा सुन व्रत पूजन सेही। भक्ति भाव सदा दृढ़ हो जायी॥२॥
 घर में धन सम्पन्न कुबेर ही आये। नष्ट हो संकट मंगल हो जाये॥३॥
 राजा प्रजा अरु सब नरनारी। प्रेम भाव स्नेह सब होय बारी बारी॥४॥
 पुत्र दारा और सब रिश्तेदारी। मनवाच्छित पाये परम सुख भारी॥५॥
 जय जय हो जय गुरु गोरक्षनाथा। सदा भक्ति रहो चरणों के दासा॥६॥
 इतना ॐ शिव गोरक्ष व्रत कहानी। पंचपरमेश्वर ने सिद्ध कर जानी॥७॥

ऐसे इच्छापूर्ति करने वाले श्री गोरक्षनाथजी को, कोई जतीसति कहते हैं, तो कोई शिव शम्भु अवतार, तो कोई महाकालनाथ, तो कोई परम सत्गुरुदेव कहते हैं और इसी कलीकाल में यही सिद्ध सनातन श्री गुरु गोरक्षनाथजी ऐसे ॐ शिव गोरक्ष व्रत का स्वरूप धारण कर सब की इच्छा पूर्ण करते हैं। अन्त में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

सुफलम्-सुखलम्-सम्पूर्णम्

॥इति पंचम अध्याय॥

बोलो श्री शम्भुजती, गुरु गोरक्षनाथजी महाराज की जय हो, ...जय हो जय हो

अथ व्रतान्ते हवनम्

53

इस श्रीनाथ व्रत पूजन के अन्त में हवन का भी विधान है। खुद व्रती कर सके तो ठीक अन्यथा विद्वान् ब्राह्मण को आमंत्रित करके हवन विधि करनी चाहिए।

अतः सुन्दर वेदी - पंचभू संस्कार-ब्रह्मासन-व्रती या कथा वाचक-ब्राह्मण आसनो हवन सामग्री इत्यादि साहित्य लेकर निम्न मंत्रों द्वारा हवन करे।

कुशैः परिसमूह्य तान कुशानैशान्यां परित्यज्य
गोमयोदकेनोपलिप्य स्नुवमूलेन त्रिरुल्लिख्य उल्लेखन क्रमेण मृदमुदधृत्य जलेनाभ्युक्ष्य
अग्निमुपसमाधाय ब्रह्मासनादारभ्य पर्युक्षणान्तं कुशकाण्डिकां कृत्वा हवनम् ब्रह्मणाऽन्वारब्धो
भूत्वा--ॐ प्रजापतये स्वाहा।

(इनका शेष बिन्दु प्रोक्षणी में त्याग)

इदं प्रजापते न मम। इदमिन्दाय स्वाहा॥ इदमिन्दाय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये
न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय इदं न मम॥ इत्याज्यभागौ॥ ॐ भूः स्वाहा
इदमग्नये०॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०॥ ॐ स्वः स्वाहा इदंसूर्याय०॥ एता महाव्याहृतयः॥
ततः वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य
ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॐ वरुणस्य स्वाहा इदं वारुणाय इदं व मम

ॐ गणानात्वा गणपतिं गूं हवामहे० इत्यादि मंत्रेण गणपतये स्वाहा॥ इदं गणपतये इदं न मम॥

(इसके आगे त्याग की आवश्याना नहीं है) नवग्रह होमोयथा....

ॐ आकृष्णेनेति सूर्याय स्वाहा ॐ इमं देवा इति चन्द्रमा स्वाहा॥ ॐ अग्निमूर्ध्नेति भौमाय

स्वाहा॥ ॐ उदबुध्यस्वाग्ने इति बुधाय स्वाहा॥ ॐ बृहस्पतये इति गुरुवे स्वाहा॥ ॐ अन्नात

परिश्रुतो इति शुक्राय स्वाहा॥ ॐ शन्नो देविति शनैश्चराय स्वाहा॥ ॐ क्या नश्चेत्रेति राहवे

स्वाहा॥ ॐ केतुं कृण्ववन्नेति केतवे स्वाहा॥ ॐ सत्यनाथायते स्वद्य ॐ सन्तोष नाथयते

स्वाहा॥ ॐकार आदिनाथायते स्वाहाः॥ ॐ उदयनाथायते स्वाहाः

अथ प्रधान होम : ॐ गो गोरक्षनाथाय स्वाहाः॥ अष्टोत्तर शताहुतिः।

अथ पूर्णाहूति : ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

सर्वं वैपूर्ण स्वाहा : अथ नीराजनम आरती, पश्चात् पुष्पांजलि प्रदक्षिणा कृत्वा पठेत्।

क्षमा प्रार्थना।

आसन न जानामि न जानामि तव साधनम्। ध्यानं चैव न जानामि क्षम्यतां योगेश्वरम्॥१॥

योगहीनं ध्यान हीनं भक्तिहीनं जतीश्वरं। मन्त्रहीनं क्रियाहीनं मुद्राहीनं महेश्वरः॥२॥

मन्त्रहीनं जपहीनं तपहीनं तपीश्वरः॥ यत् सेवितं मया नाथम् परिपूर्णं तदस्तु मे॥३॥

॥ आरती गोरक्ष व्रत की ॥

55

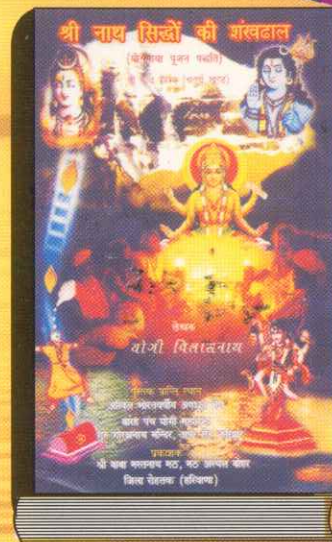
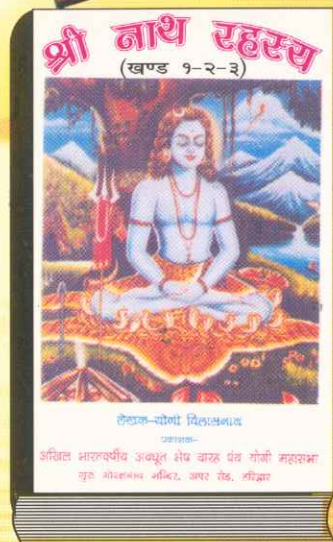
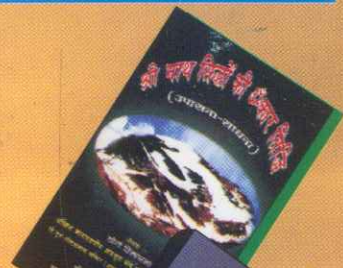
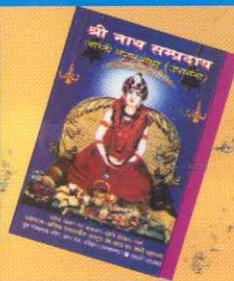
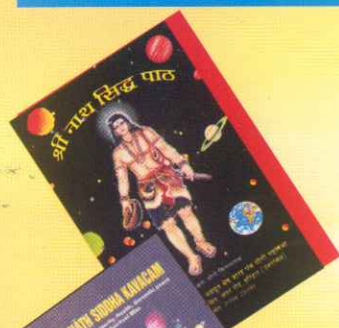
जय गोरक्ष योगी स्वामी जय गोरक्ष योगी। आरती करु मैं तुम्हरी अटल भक्ति भोगी॥धु॥
 कर्पूरवर्ण बाघाम्बर मृगछाला धारी। त्रिशुल खप्पर हाती संकट भय हारी ॥1॥ जयगोरक्ष,
 जटाजुट सुनहरी चन्द्र भाल सोहे। ज्ञान ध्यान को देखे सिद्ध संत मोहे॥2॥ जयगोरक्ष,
 शिव शक्ति तुमही नाथ पंथ स्वामी। सत्य सनातन जनमन के अन्तर्यामि॥3॥ जयगोरक्ष,
 कलापनगर के कल्पसिंह पर कृपा किन्ही। धन सम्पन्न पुत्र देकर मोक्ष मुक्ति दीन्ही ॥4॥ जयगोरक्ष,
 श्रेष्ठी वैश्य ने वचन व्रत का कर ही ना पाया। अन्त में सजा देकर फिर तुमने ही अपनाया॥5॥ जयगोरक्ष,
 भूले व्रत को बन्दी गृह में दुःख को पाया। पश्चाताप किया तो मनवाच्छित फल पाया॥6॥ जयगोरक्ष,
 धन्य धन्य गुलरंजन और गजवन्ति। राजपाट दिया उसे मात-पिता पत्नि॥7॥ जयगोरक्ष,
 भूत प्रेत को मुक्ति दीनी तुम ही मुक्तिदाता। भट्ट भट को पुत्र दीन्हा तुम ही पुत्रदाता॥8॥ जयगोरक्ष,
 रूपवन्ति सागरसेन भये भक्त भारी। तुम्हरे कृपा के कारण राजपाठ धारी ॥9॥ जयगोरक्ष,
 फल-फूल रोट प्रसाद प्रिय भोग भारी। भोग लगाये प्रसाद पाये सब संकट को हारी॥10॥ जयगोरक्ष,
 हम भक्त मांगू तब कृपा वर देना। नित्य सदा रहो भक्ति सुख शान्ति देना॥11॥ जयगोरक्ष,
 गोरखदेव की आरती जो जन कोई गावे। भक्ति जुक्ति पाकर भव सागर तर जावे॥12॥ जयगोरक्ष,
 जय गोरक्षयोगी, स्वामी जय गोरक्ष योगी। आरती करु मैं तुम्हरी अटल भक्ति भोगी॥धु॥

॥ व्रत नियम ॥

56

1. व्रत पूर्ण श्रद्धा भक्ति-पवित्र भावसे करे। व्रत-साधु-सन्त, नर-नारी सब कर सकते हैं। पूर्ण दिवस व्रत (उपवास) करे सूर्यास्त उपरान्त व्रत छोड़े, व्रत में दूध-फलाहार इ० ले सकते हैं।
2. व्रत, पूजन सप्ताह में रविवार या सवा मास या सवा वर्ष या चार्तुरमास या श्रवण मास में या शुभदिन पर तथा 9, 11, 21 रविवार की मन्त मांगते हुए भी कर सकते हैं।
3. व्रत जल स्रोत (नदी किनारे) तथा पीपल/वटवृक्ष/गुलर के नीचे मठ मन्दिर या घर पर भी कर सकते हैं।
4. व्रत का उद्यापन या पूर्णता होते समय अपेक्षा हो तो हवन करे या ब्राह्मण/सन्त के द्वारा कर सकते हैं।
5. व्रत पूर्णता के उपरान्त दक्षिणा, अन्नदान, वस्त्रदान, पुस्तकदान संख्यानुसार 9, 11, 21, 51 आमंत्रित साधु-सन्त-ब्राह्मण-भक्तों को कर सकते हैं।
6. व्रत सम्पूर्ण विधान स्वयं या पंडित द्वारा कर सकते हो रात्रि गोरक्ष जागरण, कीर्तन, भजन, नृत्य कर सकते हैं।
7. सूतक-पातक-हजामत इत्यादि के अशुद्धि दिन को व्रत नहीं करना चाहिए।
8. विशेष सूचना :- इस पुस्तक में पाठ करते समय “ॐ शिव गोरक्ष व्रत” यह नाम मुख्यता 51 बार आया है और अन्य पृष्ठ संख्या पर 57 बार आया है। अतः योग-संजोग से नामों की संख्या $51+57=108$ बार आयी है तब इसका व्रत का विधि-विधान बनता है कि आप
 1. 51 या 108 रविवार को मन्त माँगते हुए व्रत कर सकते हैं।
 2. 51 या 108 नाथ सिद्ध या सन्तों को विशेष दान दक्षिणा दे सकते हैं।
 3. 51 से 108 संख्या की यही व्रत पुस्तकें दान स्वरूप में भक्तों को बांट सकते हो । अतिरिक्त ज्यादा पुस्तकें दान करोगे तो उतनी ही अधिक से अधिक गुरु गोरक्षनाथजी की कृपा अवश्य बनी रहेगी।

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन





राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहाँ विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www.yogigorakshnath.org, e-mail: media@yogigorakshnath.org

Ph. 01334-226583

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार।